नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 388, नई दिल्ली, शुक्रवार 28 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"शब्दों से नहीं,व्यवहार से पहचान बनती है। क्योंकि अच्छे शब्दकुछ समय के लिए याद रहते हैं, लेकिन अच्छा व्यवहारजीवन भर याद रहता है।

03 पेट्रोल-डीजल पर सरकार का बड़ा फैसला!
06 ब्रोशर से परे: निजी स्कूल शिक्षा की वास्तविकता
08 पेट्रोल-डीजल पर सरकार का बड़ा फैसला!

देशभर के विशेषज्ञ एक मंच पर — "परिवहन विशेष कॉन्क्लेव 2026" बनेगा विचारों का महासंगम

जलवायु, ट्रैफिक, साइबर क्राइम और महिला सुरक्षा पर होगा मंथन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली | देश के प्रतिष्ठित परिवहन एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े मंच परिवहन विशेष द्वारा आयोजित 3rd Parivahan Vishesh Conclave & Excellence Award Ceremony 2026 का भव्य एवं गरिमामय आयोजन आगामी 29 मार्च 2026 (रविवार) को दोपहर 1:00 बजे से नई दिल्ली स्थित मावलांकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशनल क्लब में संपन्न होगा। यह आयोजन देशभर के विशेषज्ञों, नीति-निर्माताओं, समाजसेवियों एवं प्रबुद्ध नागरिकों का एक महत्वपूर्ण संगम सिद्ध होगा।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री जस्टिस राजेश टंडन (पूर्व न्यायाधीश, उत्तराखंड उच्च न्यायालय) अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। वे अपने संबोधन में न्यायिक दृष्टिकोण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा परिवहन व्यवस्था से जुड़े समसामयिक विषयों पर अपने विचार साझा करेंगे, जो उपस्थित जनसमूह के लिए अत्यंत प्रेरणादायक होंगे।

इस अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों—जैसे चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासन, सुरक्षा, सामाजिक सेवा एवं आध्यात्मिक क्षेत्र—से जुड़े प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों को Guest of Honour के रूप में आमंत्रित किया जाएगा। इन विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति कार्यक्रम की गरिमा को और अधिक ऊँचाइयों तक पहुंचाएगी।

यह कॉन्क्लेव समकालीन चुनौतियों एवं सामाजिक सरोकारों पर केंद्रित रहेगा। विशेष रूप से

- **जलवायु परिवर्तन एवं प्रदूषण**
- **सड़क दुर्घटनाएं एवं ट्रैफिक जाम**
- **साइबर क्राइम**
- **महिला सुरक्षा**

जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा गहन विचार-विमर्श किया जाएगा। विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी वक्ता अपने अनुभव, सुझाव एवं शोध आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए इन समस्याओं के समाधान हेतु ठोस एवं व्यावहारिक उपायों पर प्रकाश डालेंगे।

कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण Excellence Award Ceremony होगा, जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों, संस्थानों एवं संगठनों को सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन लोगों के प्रयासों को पहचान देने का एक सार्थक प्रयास होगा, जिन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कार्यक्रम स्थल को विशेष रूप से आकर्षक एवं भव्य रूप से सजाया जाएगा। पुष्प सज्जा, सुसज्जित मंच, आधुनिक प्रकाश व्यवस्था एवं सुव्यवस्थित बैठने की व्यवस्था कार्यक्रम को एक गरिमामय वातावरण प्रदान करेगी। बड़ी संख्या में उपस्थित दर्शक, गणमान्य अतिथि एवं मीडिया प्रतिनिधि इस आयोजन के साक्षी बनेंगे।

आयोजकों के अनुसार, यह कॉन्क्लेव केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, जागरूकता बढ़ाने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह मंच विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को एक साथ लाकर संवाद, सहयोग और समाधान की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करेगा।

कार्यक्रम के अंत में आयोजक सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करेंगे तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के प्रभावशाली आयोजनों के माध्यम से समाज एवं राष्ट्रहित में योगदान देने का संकल्प दोहराया जाएगा।

प्रकृति और पुरुष के संयोग को जीव कहते है

पिंकी कुंडू

पुरुष है शुद्ध चैतन्य तत्त्व, और प्रकृति है तेईस तत्त्वों का समुच्चय — जिनमें दस केवल मर्त्यलोक में ही जीव के साथ रहते हैं किन्तु मृत्यु के बाद साथ नहीं जाते — वे हैं पाँच महाभूत और उनकी पाँच तन्मात्राएँ (उनके गुण) जो इन्द्रियों के विषय हैं।

जीव के साथ सदैव रहने वाले प्रकृति के तेरह तत्त्व हैं — तीन अन्तःकरण और दस बाह्य-करण। अन्तःकरण हैं बुद्धि या सत्त्व, अहंकार, और मन। बाह्य करण हैं पाँच कर्मेन्द्रिय और पाँच ज्ञानेन्द्रिय। ज्ञानेन्द्रिय द्वारा बाह्य भौतिक विश्व का संज्ञान प्राप्त होता है जो इन्द्रियों का "भोग" है। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म किये जाते हैं ताकि इच्छानुसार भोग प्राप्त हों। इन दस इन्द्रियों में ही इच्छाओं का वास होता है। ये इन्द्रियाँ भौतिक नहीं है, सूक्ष्म तत्त्व हैं।

दस इन्द्रियों और मन के अधिष्ठाता देवता हैं ग्यारह रूद्र। जब कामनाओं का संहार हो जाता है तो ग्यारह रूद्र मिलकर एक शिव बन जाते हैं और मन में सभी इन्द्रियों का विलय हो जाता है, तब बिना इन्द्रियों के ही मन दस दिशाओं और तीन कालों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है — इसी को ज्ञानचक्षु कहते हैं — शिव की तीसरी आँख। ज्ञानचक्षु कामनाओं और उनके वास रूपी विश्व का संहार करता है।

बाह्य भौतिक विश्व का संहार नहीं होता, जीव के लिए जिस कामरूपी विश्व का अस्तित्व है उसके प्रति आसक्ति का संहार होता है। पूरे भौतिक विश्व का संहार तो केवल महाप्रलय में ही होता है जब ब्रह्मा जी एक कल्प की निद्रा में चले जाते हैं। जब उनकी निद्रा टूटती है तो 47400 दिव्य वर्ष (एक दिव्य वर्ष = 360 मानव वर्ष) लगते हैं उनको पिछले कल्प का धीरे-धीरे स्मरण करने में, और जैसे जैसे उनकी कल्पना में पूर्वकल्प आ जाता है वैसे वैसे भौतिक सृष्टि बनती जाती है —

"धाता यथा पूर्वं अकल्पयत" (अघमर्षण सूक्त, ऋग्वेद)।

प्रकृति तीन गुणों वाली है — सत, रज और तम। तीनों गुणों में वैषम्य होता है तो प्रकृति तेईस तत्त्वों के रूप में व्यक्त होती है। तीनों गुणों में साम्य होता है तो प्रकृति के सभी तेईस गुणों का विलय हो जाता है और प्रकृति अपने मूल अव्यक्त स्वरुप में अवस्थित हो जाती है। प्रत्येक जीव के लिए प्रकृति इसी प्रकार से अलग-अलग व्यक्त होती है और मोक्ष मिलने पर अव्यक्त हो जाती है। प्रकृति के चौबीस तत्त्वों में से तेईस व्यक्त होते हैं। गायत्री छन्द में चौबीस अक्षर होते हैं, किन्तु गायत्री मन्त्र में केवल तेईस अक्षर ही व्यक्त होते हैं।

प्रकृति जड़ है। जड़ का अर्थ है जो पदार्थ जिस अवस्था में है उसी में रहना चाहती है, स्वतः कोई परिवर्तन नहीं कर सकती, जब तक बाह्य बल न लगे। उस बाह्य बल का प्रदाता है चैतन्यता जो पुरुष या आत्मा है। प्रकृति के सभी तत्त्व अपने स्वभाव को बदलना नहीं चाहते, मोक्ष में बाधक हैं। प्रकृति की अधिष्ठात्री है आदि-शक्ति जो जड़ नहीं है, अतः पुरुष की ही शक्ति है, दोनों अभिन्न हैं, यही अद्वैत है।

इन तेरह तत्त्वों (करणों) के समुच्चय को कारण-शरीर कहते हैं। यह जीव के जन्म और मरण का कारण है। इन सभी तेरह तत्त्वों के तीन प्रभेद होते हैं — सत, रज और तम।जीव की चार अवस्थाएं होतीं हैं — जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त और तूरीय।

जब जीव इन्द्रियों द्वारा अनुभूत बाह्य विश्व के प्रति चेतन रहता है और उन बाहरी पदार्थों का संज्ञान लेकर उनको इन्द्रियों द्वारा भोगने का क्षणिक आनन्द लेता है तब जीव जाग्रत कहलाता है।

जब इन्द्रियाँ सो जाएँ और मन सक्रीय रहे तब स्वप्न की अवस्था होती है। स्वप्न का अर्थ है सु-अप्न, अर्थात "अच्छे प्राप्ति"। स्वप्न में जाग्रत से भी बेहतर ज्ञान की प्राप्ति होती है और कठिन समस्याओं का समाधान मिलता है। किन्तु इसके लिए जीव को सात्विक संस्कार अर्जित करने पड़ते हैं। स्वप्न में समस्याओं का हल पाने के लिए कुछ विशिष्ट वैदिक विधियां होती हैं। इच्छाओं का वेग प्रबल हों तो स्वप्न में उनको कल्पना द्वारा जीव प्राप्त करने का प्रयास करता है। उस समय जीव भूल जाता है कि स्वप्न काल्पनिक है। स्वप्न में जीव के ज्ञान का जो मूर्खतापूर्ण स्तर होता है वही उसकी असली IQ (बुद्धि-लब्धि) है जो मरने के बाद भी साथ जाती है — सारा किताबी ज्ञान धरा रह जाता है और सारी सांसारिक उपाधियाँ वैतरणी में बह जातीं हैं। संसार के वासनामय प्रवाह के विपरीत तरने को वैतरणी तरना कहते हैं।

सुषुप्ति का अर्थ है अच्छी निद्रा जब मन भी सो जाए। मन उस तत्त्व का नाम है जो संकल्प ले। मनुष्य की वास्तविक पहचान मन से ही है। व्यक्ति कैसा है यह उसके संकल्पों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।

जीव अपनी क्या पहचान मानता है उसे अहंकार कहते हैं। अहंकार ही आत्मतत्त्व पर परदे का कार्य करता है। संसार से सकाम सम्पर्क अहंकार बढ़ाता है।

शास्त्र के अनुकूल प्रेरणा देने वाले तत्त्व को बुद्धि कहते हैं। जिस युग में दुर्बुद्धि की ही महत्ता हो उसे कलियुग कहते हैं। बुद्धि को पूर्ण स्वच्छ करने वाले मन्त्र का नाम है गायत्री। इसे वेदमाता भी कहते हैं क्योंकि यह वास्तविक ज्ञान उत्पन्न करती है। गायत्री मन्त्र की दीक्षा केवल उसी को दी जा सकती है जिसने शारीरिक ब्रह्मचर्य कम से कम एक वर्ष तक पक्का कर लिया हो और सांसारिक कामनाओं से बहुत हद तक विरक्त हो चुका हो। अनधिकारी को गायत्री मन्त्र की दीक्षा देने से गुरु और शिष्य दोनों का पुण्य नष्ट होता है।

सभी वेदमन्त्रों की तरह गायत्री के भी दक्षिणमार्गी और वाममार्गी पाठ होते हैं। दक्षिणमार्गी या सीधे पाठ से मन्त्र के व्याकरणिक अर्थ की सिद्धि अर्थात प्राप्ति होती है। वाममार्गी पाठ से सांसारिक दिव्य सिद्धियों की प्राप्ति होती है, जैसे कि दिव्यास्त्र, दिव्य औषधियां, दिव्य विमान, देवताओं से सन्तान की प्राप्ति, भूख-प्यास पर नियन्त्रण, हवा में उड़ना, आदि।

सुषुप्ति में मन सोया रहता है और जीव निद्रा का भ्रम पालकर ब्रह्मलोक में स्थित रहता है जहाँ से नयी ऊर्जा लेकर अगले दिन की उछल-कूद का सामर्थ्य प्राप्त करता है। निद्रा भ्रम है क्योंकि आत्मा तो चैतन्यता है, कभी सो ही नहीं सकती, भले ही अपने इस गुण से अनजान हो और चित्त पर वृत्तियों के अभाव को देखकर कुछ नहीं होने का भ्रम पाले। जब जीव को निद्रा में भी अपना होश रहता है तो उसे योगनिद्रा कहते हैं — मन सोया रहता है किन्तु जीव पूरे होश में रहता है। इसे तुरीय अर्थात चौथी अवस्था कहते हैं।

इसके दो भेद हैं — अमौन या सम्प्रज्ञात और मौन या असम्प्रज्ञात। जब मन पूरा शुद्ध हो तो उसे सोने की आवश्यकता नहीं पड़ती और वह ज्ञानचक्षु द्वारा जहाँ की और जब की चाहे वहाँ का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यह समाधि की निचली अवस्था है, असल में समाधि है ही नहीं। शब्दों में चिंतन चलता है, अतः अमौन है (-याज्ञवल्क्य), प्रज्ञा कार्य करती है अतः सम्प्रज्ञात है (-पतंजलि)।

असली समाधि में शब्दों का अस्तित्व नहीं रहता क्योंकि शब्द काल से बंधे होते हैं, वर्णन के क्रम में काल लगता है और जहाँ काल है वहाँ नश्वरता और परिवर्तन है, असत्य है। अतः यह मौन है, असम्प्रज्ञात है — जब प्रज्ञा कार्य नहीं करती। ज्ञान पाने वाले और ज्ञान की वस्तु में भेद नहीं रहता, अतः प्रज्ञा का क्या प्रयोजन ? सर्वत्र केवल एक ही अद्वैत चैतन्य तत्त्व का अस्तित्व रहता है, जिससे भिन्न हर अवस्था व्याधि है। केवल कैवल्य ही सत्य है।

ज्ञान इतना सस्ता नहीं है — ज्ञान सोते समय भी रहे , क्योंकि सोते समय जो ज्ञान का स्तर है वही असली स्तर है। स्वप्न की जाँच से पता चलेगा कि आप किस कोटि के हैं।देश और काल के अनुसार एक ही व्यक्ति को भी साधना की पद्धति बदलनी पड़ती है। केवल लक्ष्य नहीं बदलना चाहिए। मनुष्य के लिए श्रेष्ठतम लक्ष्य है अधिकाधिक चैतन्य बनना — चाहे जैसे भी

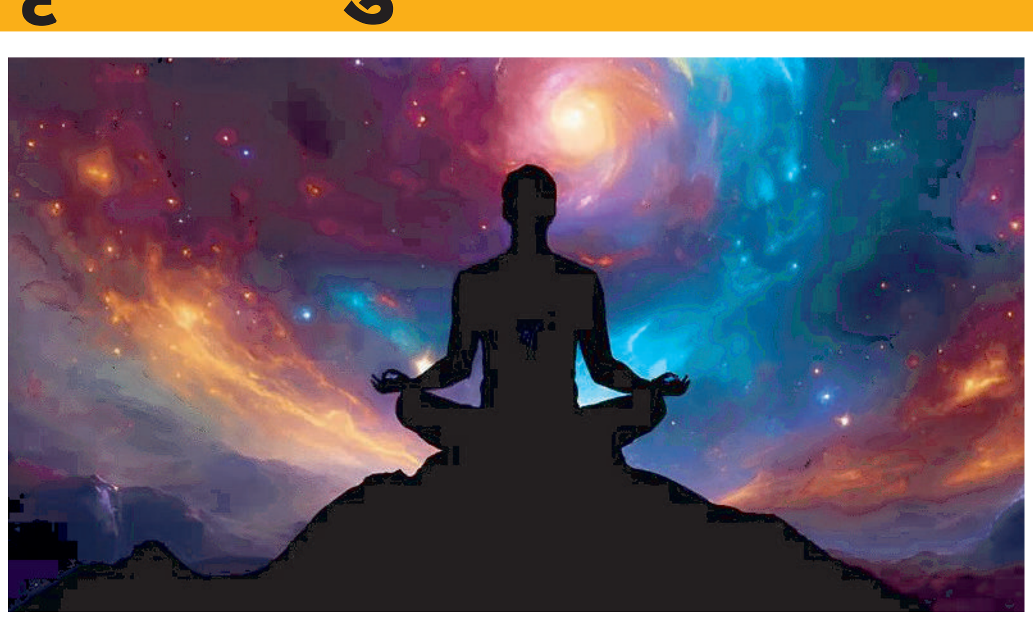

मनुष्य और प्रकृति का संबंध

पिंकी कुंडू

प्रकृति अनंत रूपों में हमारे सामने उपस्थित होती है कभी शांत और सौम्य, तो कभी प्रचंड और उग्र। कभी वह वसंत की तरह कोमल रंगों में सजी दिखाई देती है, तो कभी वर्षा की गर्जन - तर्जन में अपनी शक्ति का परिचय देती है।

वास्तव में प्रकृति का प्रत्येक रूप, प्रत्येक परिवर्तन और प्रत्येक संकेत हमें कुछ न कुछ सिखाने और समझाने का प्रयास करता है। परंतु आधुनिक जीवन की भागदौड़ में हम इतने व्यस्त हो चुके हैं कि न तो हम उसके संकेतों पर ध्यान देते हैं और न ही उसके संदेश को समझने का प्रयास करते हैं।

1. ऋतुओं का परिवर्तनः जीवन के चक्र का संदेश प्रकृति का सबसे स्पष्ट और सुंदर रूप है ऋतुओं का परिवर्तन। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसंत हर ऋतु अपने साथ अलग वातावरण, अलग अनुभव और अलग सीख लेकर आती है।

* वसंत हमें नवजीवन और आशा का संदेश देता है। पेड़ों पर नई कोपलें फूटती हैं, फूल खिलते हैं, और वातावरण में ताजगी भर जाती है। यह हमें सिखाता है कि कठिन समय के बाद भी जीवन में नई शुरुआत संभव है।

* ग्रीष्म ऋतु अपनी तीव्रता से हमें सहनशीलता का पाठ पढ़ाती है। तपती धूप और गर्म हवाएँ यह याद दिलाती हैं कि जीवन में कठिनाइयाँ आएँगी, पर धैर्य और संयम से हम उन्हें सह सकते हैं।

* वर्षा ऋतु धरती की प्यास बुझाकर यह संदेश देती है कि जीवन में संतुलन आवश्यक है। पानी के बिना जीवन संभव नहीं, परंतु अत्यधिक वर्षा बाढ़ का रूप भी ले सकती है। इससे हमें समझ आता है कि हर चीज की एक सीमा और संतुलन होना चाहिए।

* इस प्रकार ऋतुओं का चक्र हमें परिवर्तन को स्वीकार करने, धैर्य रखने और संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

2. पर्वत, नदी और सागरः स्थिरता, प्रवाह और गहराई का प्रतीक प्रकृति के स्थायी रूप पर्वत, नदियाँ और सागर भी हमें गहरे संदेश देते हैं।

* पर्वत अपनी अडिगता और ऊँचाई से हमें दृढ़ता और आत्मविश्वास का पाठ पढ़ाते हैं। तेज हवाएँ, वर्षा और बर्फबारी के बावजूद वे अपने स्थान पर अटल खड़े रहते हैं। यह हमें सिखाता है कि जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी हमें अपने सिद्धांतों पर स्थिर रहना चाहिए।

* नदी निरंतर बहती रहती है। रास्ते में चट्टानें आती हैं, मोड़ आते हैं, पर वह रुकती नहीं। वह अपना मार्ग स्वयं बना लेती है। नदी हमें सिखाती है कि जीवन में बाधाएँ आएँगी, पर हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए। ठहराव जीवन नहीं, प्रवाह ही जीवन है।

* सागर अपनी गहराई और विशालता से हमें विनम्रता और सहनशीलता का संदेश देता है। वह अनगिनत नदियों को अपने में समाहित कर लेता है, फिर भी अपनी मर्यादा में रहता है। यह हमें सिखाता है कि हमें अपने भीतर गहराई और विशाल हृदय रखना चाहिए।

3. प्राकृतिक आपदाएँः चेतावनी और संतुलन का संकेत जब प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है, तो वह अपने उग्र रूप में सामने आती है भूकंप, चक्रवात, बाढ़ या सूखा। ये आपदाएँ केवल विनाश नहीं लातीं, बल्कि एक चेतावनी भी देती हैं। बढ़ता प्रदूषण, अंधाधुंध वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ रहे हैं।

* उदाहरण के लिए, जब जंगलों को काटा जाता है, तो वर्षा का संतुलन प्रभावित होता है, जिससे सूखा या बाढ़ जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह प्रकृति का संकेत है कि यदि हम उसके नियमों का उल्लंघन करेंगे, तो परिणाम भी हमें ही भुगतने होंगे।

4. पक्षी और पशुः सरलता और सामंजस्य का पाठ प्रकृति में रहने वाले पशु - पक्षी भी हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। पक्षियों का झुंड मिलकर उड़ता है, एक - दूसरे का साथ देता है। चींटियाँ सामूहिक रूप से कार्य करती हैं और भविष्य के लिए भोजन संचित करती हैं। यह हमें सहयोग, अनुशासन और दूरदर्शिता का महत्व समझाता है।

* जानवर वर्तमान में जीते हैं। वे भविष्य की अनावश्यक चिंता नहीं करते। इससे हमें यह सीख मिलती है कि जीवन को सहजता और संतुलन के साथ जीना चाहिए।

5. मनुष्य और प्रकृति का संबंध मनुष्य स्वयं प्रकृति का ही एक अंश है, परंतु वह स्वयं को उससे अलग समझने लगा है। तकनीकी प्रगति और भौतिक सुख-सुविधाओं की दौड़ में उसने प्रकृति के साथ अपने संबंध को कमजोर कर दिया है। यदि हम थोड़ी देर के लिए शांति से बैठकर सूर्योदय को देखें, पक्षियों की चहचहाहट सुनें या बहती हवा को महसूस करें, तो हम पाएँगे कि प्रकृति हमें आंतरिक शांति और संतुलन प्रदान करती है।

* प्रकृति हमें यह भी सिखाती है कि हम सब एक - दूसरे से जुड़े हुए हैं। पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं, नदियाँ जल देती हैं, और धरती हमें अन्न प्रदान करती है। यदि हम इनका सम्मान और संरक्षण नहीं करेंगे, तो अंततः हमारा ही अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा।

* प्रकृति के अनेक रूप केवल दृश्य सौंदर्य नहीं हैं, बल्कि जीवन के गहरे दर्शन और शिक्षाओं के स्रोत हैं। वह हर दिन, हर पल हमें कुछ न कुछ सिखाने का प्रयास करती है धैर्य, संतुलन, सहयोग, परिवर्तन और विनम्रता। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम अपनी व्यस्त दिनचर्या से थोड़ा समय निकालकर उसके संदेशों को समझने का प्रयास करें।

* यदि हम प्रकृति की भाषा को समझ लें, तो न केवल हमारा जीवन संतुलित और शांतिपूर्ण होगा, बल्कि हम इस धरती को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और सुंदर भी बना सकेंगे। प्रकृति मौन है, पर उसका संदेश अत्यंत गहरा और प्रभावशाली है बस हमें उसे सुनना और समझना सीखना होगा।

समझ केवल देखने से नहीं, बल्कि भीतर झाँकने से आती है

पिंकी कुंडू

मनुष्य केवल शरीर या सामाजिक पहचान भर नहीं है; वह अनुभवों, स्मृतियों, इच्छाओं, आशंकाओं और संबंधों का जटिल संयोजन है। जन्म से लेकर वर्तमान क्षण तक जो कुछ वह देखता, सुनता, सहता और समझता है, वही उसकी भीतरी संरचना का हिस्सा बनता जाता है। इसी कारण दो व्यक्ति, चाहे वे एक ही परिवार में पले - बढ़े हों, समान शिक्षा पाई हो, फिर भी उनकी प्रतिक्रिया, सोच और व्यवहार में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

उदाहरण के लिए, एक ही घर में पले दो भाई - बहन लें। दोनों ने समान वातावरण देखा, समान परिस्थितियों का सामना किया। फिर भी एक अधिक मिलनसार और अभिव्यक्तिशील हो सकता है, जबकि दूसरा शांत और अंतर्मुखी। जब घर में कोई समस्या आती है, तो पहला तुरंत संवाद के माध्यम से समाधान खोजने की कोशिश करेगा, जबकि दूसरा पहले अकेले में बैठकर परिस्थिति को समझने और भावनाओं को संतुलित करने का प्रयास करेगा। दोनों की प्रतिक्रिया भिन्न है, पर दोनों अपने - अपने ढंग से स्वाभाविक हैं।

इसी प्रकार कार्यस्थल का एक दृश्य देखें। एक कर्मचारी आलोचना को सुधार का अवसर मानकर आगे बढ़ता है, जबकि दूसरा उसी आलोचना को व्यक्तिगत अस्वीकार के रूप में महसूस करता है। यहाँ अंतर क्षमता का नहीं, बल्कि भीतर की संवेदनात्मक बनावट का है। किसी का आत्मविश्वास उसके पूर्व अनुभवों से पुष्ट हुआ है, तो किसी की संवेदनशीलता पुराने आघातों से आकार ले चुकी है।

समाज अक्सर पुरुष और स्त्री के व्यवहार को निश्चित साँचे में ढालने की कोशिश करता है जैसे पुरुष कठोर और तर्कप्रधान होंगे, स्त्रियाँ कोमल और भावुक। पर वास्तविकता इससे कहीं अधिक जटिल है। एक पुरुष अत्यंत संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण हो सकता है, जबकि एक स्त्री निर्णय लेने में अत्यंत दृढ़ और विश्लेषणात्मक। यह विविधता किसी जैविक सीमा से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत यात्रा से उत्पन्न होती है।

हर व्यक्ति के भीतर एक अदृश्य संवाद चलता रहता है अपने आप से, अपने अतीत से, और भविष्य की आशंकाओं से। यही आंतरिक वार्तालाप उसकी मनोदशा को प्रभावित करता है। यदि किसी ने बचपन में असुरक्षा का अनुभव किया है, तो वह बड़े होकर अधिक सतर्क या संदेहशील हो सकता है। वहीं जिसने प्रोत्साहन और स्वीकृति पाई है, वह अधिक निडर और खुले स्वभाव का हो सकता है।

कभी - कभी हम दूसरों को उनके एक क्षणिक व्यवहार से परिभाषित कर देते हैं। यदि कोई चुप है, तो हम उसे घमंडी समझ लेते हैं; यदि कोई अधिक बोलता है, तो उसे हल्का या अस्थिर मान लेते हैं। पर व्यवहार के पीछे कारणों की एक पूरी परत छिपी होती है। चुप्पी कभी आत्मचिंतन का परिणाम होती है, तो कभी अस्वीकृति के भय का। अधिक बोलना कभी उत्साह का प्रतीक होता है, तो कभी भीतर की असुरक्षा को ढकने का प्रयास।

जीवन की घटनाएँ भी मनोदशा को बदलती रहती हैं। सफलता आत्मविश्वास को बढ़ा सकती है, पर कभी-कभी अहंकार को भी जन्म दे सकती है। असफलता किसी को तोड़ सकती है, पर किसी को और अधिक दृढ़ भी बना सकती है। यही कारण है कि स्वभाव कोई स्थायी और जड़ वस्तु नहीं, बल्कि परिस्थितियों के साथ विकसित होने वाली प्रक्रिया है।

यदि हम इस विविधता को समझने का प्रयास करें, तो संबंधों में अधिक धैर्य और सहानुभूति आ सकती है। जब हम यह स्वीकार करते हैं कि सामने वाला व्यक्ति अपनी विशिष्ट पृष्ठभूमि और भावनात्मक संरचना के साथ प्रतिक्रिया दे रहा है, तब आलोचना की जगह समझ जन्म लेती है।

मानव समाज की सुंदरता इसी भिन्नता में निहित है। यदि सभी की प्रतिक्रियाएँ, विचार और भावनाएँ एक समान होतीं, तो न संवाद में गहराई होती, न अनुभवों में विस्तार। अलग - अलग मनोदशाएँ ही जीवन को बहुआयामी बनाती हैं और हमें यह सिखाती हैं कि समझ केवल देखने से नहीं, बल्कि भीतर झाँकने से आती है।

अनमोल स्वांस के लिए कैसी बहस

पिंकी कुंडू

सभी जानते हैं कि दुनिया की सारी दौलत मिलकर भी एक सांस नहीं खरीद सकती और न ही परमात्मा के अलावा इसे कोई दे सकता है। स्वांसों का प्रसाद जीवनशैली के लिए प्रकृति के कानूनी रूप से पूरी तरह स्वतंत्र है। सांस है तो सब कुछ है और नहीं है तो कुछ भी नहीं है। लेकिन मनुष्य इसके लिए भी आस्तिकता और नास्तिकता में उलझा हुआ है। न तो नास्तिक समझ पा रहा है कि मैं भगवान को क्यों नहीं मानता और न ही आस्तिक को यह समझ में आ रहा है कि मैं भगवान को क्यों मानता हूं।

इस सांस के लिए कैसी बहस। संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने - अपने धर्म का पालन करते हुए ध्यान अभ्यास से स्वांसों के भीतर की शक्ति को पहचान सकता है। ज्ञान की समझ यह होनी चाहिए कि जीवन के लिए स्वांस का होना मूल है और अभ्यास से इसके भीतर की शक्ति

को पहचानना है। जीवन में कुछ बातें होती रहती हैं। इन पर जितना शोध करेंगे उतना उलझ जाएंगे।

इसलिए जो होता है उसे होने दीजिए। जैसा हम बोते हैं वैसा पाते हैं और वह घटकर रहेगा। परमात्मा भी ऐसा ही है। वह स्वांसों के भीतर का एक रहस्य है। ऐसा रहस्य जिसको ध्यान अभ्यास से सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। परमात्मा को खोलने का प्रयास व्यर्थ है। मनुष्य पहेली है और पहेली सुलझाई जा सकती है, लेकिन परमात्मा के रहस्य को खोलना बहुत मुश्किल है। परमात्मा इतना रहस्यमय है कि गहरा ही नहीं बल्कि अथाह है। गहराई तो फिर भी नापी जा सकती है पर जो अथाह है उसे कहां से पकड़ेंगे ? इसलिए यदि कोई नास्तिक परमात्मा को नहीं मानता तो आस्तिक को परेशान होने की जरूरत नहीं है। परमात्मा स्वांसों के भीतर की परम शक्ति है और जीने का मामला है। इसलिए प्रत्येक स्वांस का हर पल आनंद लेना चाहिए। यह तभी संभव है जब ध्यान अभ्यास से स्वांसों के भीतर की शक्ति को पहचान कर स्वयं का बोध कर लिया जाए और परमानंद का अनुभव हो जाए।

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
YouTube

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 388, नई दिल्ली, शुक्रवार 28 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"शब्दों से नहीं,व्यवहार से पहचान बनती है। क्योंकि अच्छे शब्दकुछ समय के लिए याद रहते हैं, लेकिन अच्छा व्यवहारजीवन भर याद रहता है।

03 पेट्रोल-डीजल पर सरकार का बड़ा फैसला!
06 ब्रोशर से परे: निजी स्कूल शिक्षा की वास्तविकता
08 रामनवमी शोभायात्रा में दो समुदायों के बीच झारखंड के गढ़वा में झड़प, पथराव

पेट्रोल-डीजल पर सरकार का बड़ा फैसला!

पिंकी कुंडू

पेट्रोल पर एक्साइज ड्यूटी 3 रुपये घटाई, डीजल पर सीधा 10 रुपये की कटौती।

पेट्रोल पर 13 से घटकर 3 रुपये, डीजल पर जीरो एक्साइज ड्यूटी...फ्यूल संकट के बीच सरकार ने दी बड़ी राहत।

केंद्र सरकार ने तेल संकट के बीच पेट्रोल और डीजल पर एक्साइज ड्यूटी कम कर दी है।

पेट्रोल पर 10 रुपये और डीजल पर भी 10 रुपये की कटौती की है।

ईरान और इजरायल-अमेरिका के बीच युद्ध से कच्चे तेल की आपूर्ति प्रभावित हुई, लेकिन देश ने अगले 60 दिन के लिए पर्याप्त भंडार सुनिश्चित किया है।

ईरान और इजरायल-अमेरिका के बीच युद्ध से कच्चे तेल की आपूर्ति प्रभावित हुई, लेकिन देश ने अगले 60 दिन के लिए पर्याप्त भंडार सुनिश्चित किया है।

सरकार ने पेट्रोल-डीजल पर एक्साइज ड्यूटी में बड़ी कटौती कर दी. पेट्रोल पर 13 रुपये से घटाकर 3 रुपये और डीजल पर 10 रुपये से सीधे शून्य. सुनने में लगता है कि अब तेल सस्ता हो जाना चाहिए, लेकिन हकीकत इससे अलग है. आम आदमी के मन में यही सवाल है कि जब टैक्स घटा तो कीमत क्यों नहीं घटी? इसका जवाब एक लीटर पेट्रोल के पूरे गणित में छिपा है, जिसमें सिर्फ केंद्र सरकार ही नहीं, बल्कि राज्य सरकार

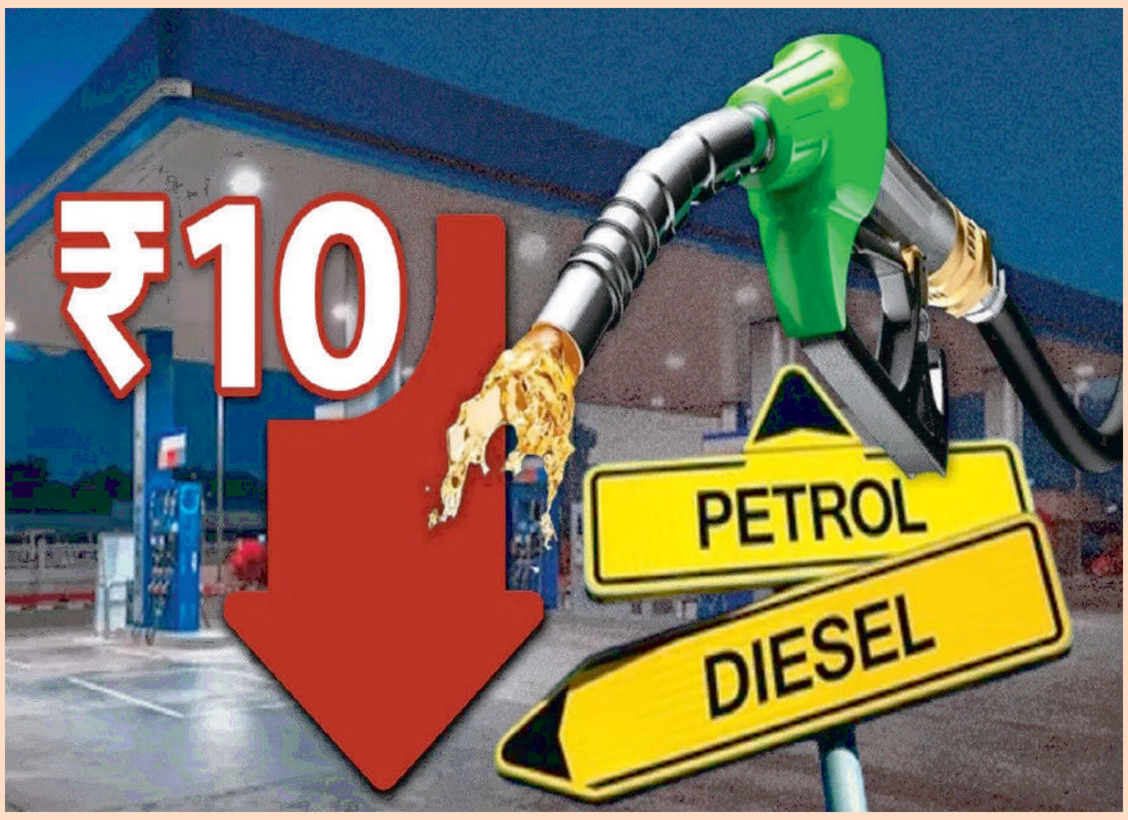

और तेल कंपनियां भी शामिल होती हैं.

पहले समझिए पूरा खेल क्या है

पेट्रोल-डीजल की कीमत सिर्फ एक टैक्स से तय नहीं होती. इसमें कई परतें होती हैं:

कच्चे तेल की कीमत (क्रूड ऑयल)
रिफाइनिंग और ट्रांसपोर्ट खर्च
केंद्र सरकार की एक्साइज ड्यूटी
राज्य सरकार का वैट (VAT)

पेट्रोल पंप डीलर का कमीशन

यानी एक्साइज ड्यूटी घटने का मतलब यह नहीं कि पूरा फायदा सीधे ग्राहक तक पहुंच जाएगा.

सरकार ने उर्वरक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए, उत्पादन बढ़ाने हेतु गैस आपूर्ति में वृद्धि

संगिनी घोष

सरकार ने किसानों के लिए उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने और उत्पादन को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कई सक्रिय कदम उठाए हैं। यह पहल कृषि क्षेत्र को मजबूत समर्थन देने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

अधिकारियों के अनुसार, उर्वरक उत्पादन को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक गैस की आपूर्ति में उल्लेखनीय वृद्धि की गई है। वर्तमान में उर्वरक क्षेत्र को दी जा रही गैस आपूर्ति पिछले छह महीनों की औसत खपत के लगभग 80 प्रतिशत तक पहुंच गई है।

इस कदम से उर्वरक उत्पादन में स्थिरता आने और किसानों को समय पर आवश्यक उर्वरक उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। साथ ही, यह संभावित कमी की स्थिति को रोकने और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने में भी सहायक होगा। सरकार ने स्पष्ट किया कि कृषि मौसम की मांग को ध्यान में रखते हुए उर्वरकों की उपलब्धता बनाए रखना उसकी प्राथमिकता है।

ऐसे देखें तो यह कदम किसानों को आवश्यक संसाधन समय पर उपलब्ध कराने और कृषि उत्पादन को स्थिर बनाए रखने की दिशा में सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मुख्य बिंदु

* सरकार ने उर्वरक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए
* उर्वरक उत्पादन को सुरक्षित रखने पर जोर
* प्राकृतिक गैस आपूर्ति में वृद्धि
* आपूर्ति अब पिछले छह महीनों की औसत खपत के 80% तक
* किसानों को समय पर उर्वरक उपलब्ध कराने में मदद

SEO Meta Description:

सरकार ने उर्वरक क्षेत्र में प्राकृतिक गैस आपूर्ति बढ़ाकर उत्पादन को सुरक्षित किया है, जिससे किसानों को पर्याप्त उर्वरक उपलब्ध हो सके।

बदलता मौसम, पिघलते ग्लेशियर और आने वाला जल संकट

गजेंद्र सिंह

फरवरी 2026 ने भारत के मौसम इतिहास में एक असामान्य संकेत दर्ज किया।

औसतन लगभग 32–33 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ यह महीना पिछले 125 वर्षों में सबसे गर्म और शुष्क फरवरी के रूप में सामने आया। आमतौर पर फरवरी भारत में हल्की ठंड और बसंत की शुरुआत का महीना माना जाता है लेकिन इस बार तापमान का यह असामान्य उछाल संकेत देता है कि जलवायु प्रणाली में गहरे स्तर पर बदलाव हो रहा है।

मार्च की शुरुआत ने इन आशंकाओं को और अधिक स्पष्ट कर दिया। राजधानी दिल्ली में, विशेष रूप से सफदरजंग वेधशाला में, मार्च के पहले ही सप्ताह में तापमान 35.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच गया जो पिछले लगभग 15 वर्षों का उच्चतम स्तर है। यह केवल एक शहर की स्थिति नहीं थी, बल्कि देश के व्यापक भूभाग में इसी तरह की प्रवृत्ति देखने को मिली। राजस्थान के बाड़मेर में पारा 40 डिग्री से ऊपर दर्ज किया गया, जबकि जयपुर में यह 37.8 डिग्री तक पहुँच गया। मध्य प्रदेश के रतलाम में 39.2 डिग्री और भोपाल में 36.8 डिग्री तापमान रिकॉर्ड किया गया। वहीं गुजरात के अहमदाबाद, राजकोट, दीसा और कांडला जैसे शहरों में तापमान 41 डिग्री तक पहुँच गया, जो सामान्य से काफी अधिक है।

मार्च का मौसम केवल गर्मी तक सीमित नहीं रहा बल्कि इसमें उतार-चढ़ाव भी देखने को मिले। प्रथम सप्ताह जहाँ अधिक गर्म और शुष्क रहा, वहीँ 15 मार्च के बाद अचानक ठंडी हवाएँ, बारिश और ओलावृष्टि हुई। इसका मुख्य कारण पश्चिमी विक्षोभ रहा, जो सामान्यतः दिसंबर–जनवरी में सक्रिय होता है, लेकिन इस बार मार्च के मध्य में प्रभावी हुआ। इस असामान्य और विरोधाभासी मौसम पैटर्न का प्रभाव केवल मैदानी क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसके संकेत हिमालयी क्षेत्रों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिए। वहाँ बर्फबारी में कमी और तापमान में असामान्य वृद्धि दर्ज की गई, जो पारिस्थितिक संतुलन के लिए एक गंभीर चेतावनी है। इसके दूरगामी प्रभाव कृषि उत्पादन, जल संसाधनों और समग्र जनजीवन पर पड़ सकते हैं।

हिमालय केवल एक पर्वत श्रृंखला नहीं है. यह एशिया की जल व्यवस्था की धुरी है। हिंदूकुश-हिमालय क्षेत्र को अक्सर "थर्ड पोल" और "एशिया का वाटर टावर" कहा जाता है। इसका कारण यह है कि यहाँ मौजूद विशाल बर्फ और ग्लेशियर एशिया की कई प्रमुख नदियों को पानी प्रदान करते हैं। हाल ही में अर्थ साइंस रिव्यु में प्रकाशित एक शोध ने चेतावनी दी है कि यदि वर्तमान तापमान वृद्धि का सिलसिला जारी रहा, तो इस सदी के अंत तक हिमालय की लगभग 68 प्रतिशत बर्फ समाप्त हो सकती है। यह केवल हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र का संकट नहीं होगा, बल्कि दक्षिण और मध्य एशिया के करोड़ों लोगों की जल सुरक्षा, कृषि और आजीविका पर सीधा प्रभाव डालेगा। शोध के अनुसार 1980 से 2020 के बीच हिंदूकुश–हिमालय क्षेत्र का तापमान प्रति दशक 0.2 से 0.3 डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ा है। यह दर वैश्विक औसत से लगभग दोगुनी है। पूर्वी हिमालय के कई हिस्सों में यह वृद्धि और भी तेज देखी गई है। बढ़ते तापमान के साथ-साथ वर्षा के पैटर्न में भी बदलाव आ रहा है। इससे ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और बर्फ की परत लगातार कम हो रही है। अध्ययन के अनुसार वर्ष 2000 से 2016 के बीच ग्लेशियर हर साल औसतन 0.37

मीटर पानी के बराबर बर्फ खो रहे हैं। इसका मतलब यह है कि ग्लेशियरों की मोटाई धीरे-धीरे घटती जा रही है।

मध्य और पूर्वी हिमालय में स्थिति सबसे अधिक चिंताजनक है। यहाँ वर्ष 1990 से 2020 के बीच लगभग 30 वर्षों में बर्फ की परत 30 प्रतिशत तक घट गई है। हालांकि काराकोरम क्षेत्र अपेक्षाकृत अलग तस्वीर प्रस्तुत करता है। यहाँ कुछ स्थानों पर बर्फ की मात्रा स्थिर या थोड़ी बढ़ती हुई भी देखी गई है। वैज्ञानिक इस असामान्य स्थिति को "काराकोरम एनोमली" कहते हैं। इसका संबंध पश्चिमी विक्षोभ से मिलने वाली सर्दियों की वर्षा से जोड़ा जाता है, जो इस क्षेत्र में बर्फ के संतुलन को बनाए रखने में भूमिका निभाती है। ग्लेशियरों के पिघलने का एक और गंभीर परिणाम है—ग्लेशियर झीलों की संख्या और आकार में तेजी से वृद्धि। जैसे-जैसे बर्फ पिघलती है, पहाड़ों में बड़ी झीलें बनने लगती हैं। इन झीलों के अचानक फटने की घटना को ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड कहा जाता है। यह अत्यंत विनाशकारी बाढ़ का कारण बन सकती है। मध्य हिमालय में 1977 में लगभग 1160 ग्लेशियर झीलें दर्ज की गई थीं। 2010 तक इनकी संख्या बढ़कर 2168 हो गई। पूरे हिंदूकुश-हिमालय क्षेत्र में 1833 से 2022 के बीच 697 ग्लेशियर झील फटने की घटनाएँ दर्ज की गई हैं। यह संकेत देता है कि हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र तेजी से अस्थिर हो रहा है।

हिमालय के ऊँचे क्षेत्रों में जमीन के अंदर कई मीटर तक स्थायी रूप से जमी हुई बर्फ होती है जिसे पर्माफ्रॉस्ट कहा जाता है। यह पहाड़ी ढलानों और पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन अध्ययन के अनुसार पर्माफ्रॉस्ट भी तेजी से पिघल रहा है। हर साल लगभग 20 सेंटीमीटर तक पर्माफ्रॉस्ट पिघलने की प्रक्रिया दर्ज की गई है। इससे पहाड़ों में भूस्खलन, भूमि धंसने और बुनियादी ढांचे के क्षतिग्रस्त होने का खतरा बढ़ जाता है। हिमालय से निकलने वाली नदियाँ—सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र—एशिया की जीवनरेखा मानी जाती हैं। इन नदियों के जल प्रवाह का बड़ा हिस्सा ग्लेशियरों और बर्फ के पिघलने से आता है। इन नदियों के वार्षिक जल प्रवाह का लगभग 33 से 42 प्रतिशत हिस्सा ग्लेशियर और बर्फ के पिघलने से आता है। इन नदी प्रणालियों पर लगभग 86.9 करोड़ लोगों की आजीविका निर्भर है। कृषि, पेयजल, जलविद्युत और पारिस्थितिकी—सभी के लिए ये नदियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि कई नदी बेसिन 2050 के आसपास "पीक मेल्टवाटर" की स्थिति तक पहुँच सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि आने वाले दशकों में ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने के कारण कुछ समय तक नदियों में पानी की मात्रा अधिक दिखाई दे सकती है लेकिन यह अस्थायी स्थिति होगी। जैसे-जैसे ग्लेशियर सिकुड़ते जाएंगे, नदियों में पानी की मात्रा धीरे-धीरे घटने लगेगी। इसका सबसे बड़ा प्रभाव उन क्षेत्रों पर पड़ेगा जो पहले से ही जल संकट का सामना कर रहे हैं। दक्षिण एशिया के कई हिस्सों में कृषि और पेयजल व्यवस्था पर इसका गंभीर असर पड़ सकता है।

भारत के लिए यह स्थिति केवल पर्यावरणीय संकट नहीं है। यह जल सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा उत्पादन और क्षेत्रीय स्थिरता से जुड़ा हुआ मुद्दा है। भारत की बड़ी आबादी अभी भी मानसून और हिमालयी नदियों पर निर्भर है। यदि हिमालय के ग्लेशियर तेजी से घटते हैं, तो आने वाले दशकों में जल संसाधनों का संतुलन बिगड़ सकता है। इसके साथ-साथ बढ़ती गर्मी, हीटवेव और बदलते वर्षा पैटर्न कृषि उत्पादन को भी प्रभावित कर सकते हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और खाद्य आपूर्ति दोनों पर दबाव बढ़ेगा।

बदलते मौसम, बढ़ते तापमान और पिघलते हिमालय के संकेत हमें एक ही बात बताते हैं—जलवायु परिवर्तन अब भविष्य का खतरा नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता बन चुका है। यदि आज प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले दशकों में हिमालय का संतुलन बदल सकता है और इसके परिणाम एशिया के करोड़ों लोगों के जीवन, अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। हिमालय केवल पहाड़ नहीं है—वह एशिया की जल, जीवन और सभ्यता की आधारशिला है। उसे बचाना केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं, बल्कि मानव भविष्य का प्रश्न है।(अदिति फीचर्स)

लोक नीति विश्लेषक

पिंकी कुंडू

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : बच्चों की सुरक्षा में चूक भारी पड़ी: Meta पर $375 मिलियन का ऐतिहासिक जुर्माना

न्यू मैक्सिको की एक जूरी ने मेटा प्लेटफ़ॉर्म्स को $375 मिलियन का जुर्माना भरने का आदेश दिया है। जूरी ने पाया कि कंपनी बच्चों को ऑनलाइन खतरों—जैसे यौन शोषण, अनुचित प्रस्ताव और मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभावों—से बचाने में विफल रही। यह ऐतिहासिक फैसला पहली बार है जब किसी अमेरिकी राज्य ने बच्चों की सुरक्षा के मामले में किसी बड़ी टेक कंपनी के खिलाफ मुकदमा जीता है।

फैसले के मुख्य विवरण

- फैसला सुनाए जाने की तारीख: 24 मार्च, 2026
- स्थान: सैंटा फ़े, न्यू मैक्सिको
- जुर्माना: $375 मिलियन (राज्य कानून के तहत अधिकतम सीमा)
- शामिल प्लेटफ़ॉर्म: फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप
- कानूनी आधार: न्यू मैक्सिको के अनफेयर प्रैक्टिसेज़ एक्ट और उपभोक्ता संरक्षण कानूनों का उल्लंघन

जूरी के निष्कर्ष

- मेटा ने अपने प्लेटफ़ॉर्म की सुरक्षा को लेकर उपयोगकर्ताओं को गुमराह किया।
- कंपनी बच्चों के लिए मौजूद जोखिमों को उजागर करने में विफल रही, जिनमें यौन सामग्री और अनुचित प्रस्ताव शामिल हैं।
- मेटा ने बच्चों की सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य से अधिक मुनाफ़े और उपयोगकर्ता जुड़ाव को प्राथमिकता दी।
- हज़ारों उल्लंघन पाए गए, प्रत्येक पर $5,000 का जुर्माना लगाया गया।

विस्तृत प्रभाव

- बिग टेक पर पहली जीत: न्यू मैक्सिको पहला अमेरिकी राज्य है जिसने बच्चों की सुरक्षा विफलताओं पर किसी बड़ी टेक कंपनी को अदालत में जिम्मेदार ठहराया।
- राष्ट्रीय असर: यह मामला अमेरिका भर में सोशल मीडिया कंपनियों के खिलाफ चल रही मुकदमों की लहर का हिस्सा है।
- संभावित मिसाल: अन्य राज्य भी इसी तरह की कार्रवाई कर सकते हैं, जिससे मेटा और अन्य प्लेटफ़ॉर्म पर नियामक और वित्तीय जोखिम बढ़ेंगे।

जूरी के फैसले और मेटा पर प्रभाव की तुलना

- जिम्मेदारी (Liability): जूरी ने मेटा को उपभोक्ता संरक्षण कानूनों का उल्लंघन करने का दोषी पाया।
→ बिग टेक के खिलाफ कानूनी मिसाल स्थापित हुई।

- जुर्माना (Penalty): $375 मिलियन का जुर्माना।
→ कंपनी पर बड़ा वित्तीय बोझ।

- शामिल प्लेटफ़ॉर्म (Platforms): फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप।
→ मेटा की सभी प्रमुख सेवाएँ प्रभावित।

- मुख्य मुद्दा (Key Issue): बच्चों का शोषण और मानसिक स्वास्थ्य जोखिम।
→ मेटा की प्रतिष्ठा को नुकसान और नियामक दबाव में वृद्धि।

आगे की चुनौतियाँ और जोखिम

- प्रतिष्ठा को नुकसान: बच्चों की सुरक्षा में विफल रहने पर मेटा की आलोचना बढ़ रही है।
- कानूनी जोखिम: अन्य राज्यों में और मुकदमे हो सकते हैं।
- नियामक दबाव: सरकारें सोशल मीडिया सुरक्षा पर सख्त नियम लागू कर सकती हैं।
- उपयोगकर्ता विश्वास: अभिभावक और संगठन अधिक सुरक्षा की मांग कर सकते हैं या प्लेटफ़ॉर्म से दूरी बना सकते हैं।

मुख्य निष्कर्ष

यह फैसला सोशल मीडिया कंपनियों को बच्चों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार ठहराने में एक ऐतिहासिक मोड़ है। मेटा पर लगाया गया $375 मिलियन का जुर्माना इस बात को रेखांकित करता है कि पारदर्शिता और जिम्मेदारी की मांग अब पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

शिकायतकर्ता की संतुष्टि शासन - प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता : डीसी

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने समाधान शिविर की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 27 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि समाधान शिविर जनता की समस्याओं के त्वरित निवारण के लिए सरकार की महत्वपूर्ण पहल है, इसलिए अधिकारियों को इसकी गंभीरता को समझते हुए हर शिकायत का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करना होगा। डीसी शुक्रवार को लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित साप्ताहिक समाधान शिविर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। डीसी ने बैठक के दौरान प्राप्त शिकायतों की विभागों के अनुसार समीक्षा की और मौके पर ही संबंधित अधिकारियों से स्थिति की जानकारी लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि शिकायतों के समाधान उपरांत एटीआर शीघ्र भेजी जाए। उन्होंने कहा कि समाधान शिविरों में अब तक 5762 नागरिकों से समस्याएं दर्ज कराई गई हैं, जिनमें से केवल 182 पेंडिंग हैं,जिनका जल्द समाधान सुनिश्चित किया जाए।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि समाधान शिविर का मुख्य उद्देश्य जनता की शिकायतों का त्वरित और संतोषजनक निवारण करना है। इसलिए अधिकारियों को चाहिए कि वे शिकायतकर्ता की संतुष्टि को प्राथमिकता देते हुए हर समस्या का समाधान जिम्मेदारी से करें।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे आईएएस, एसीपी अनिरुद्ध चौहान, डीआरओ मनबीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

अन्न भंडारण से जुड़ी योजनाओं को गति प्रदान करें विभाग : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

– डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों की बैठक में अन्न भंडारण महत्वाकांक्षी योजना की समीक्षा की। गोदामों के निर्माण कार्य को जल्द से जल्द पूरा कर इस महत्वाकांक्षी योजना को धरातल पर उतारें अधिकारी–डीसी

झज्जर, 27 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने शुक्रवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में भारत सरकार द्वारा प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पैक्स)की भागीदारी के साथ अन्न भंडारण की महत्वाकांक्षी योजना की प्रगति की समीक्षा की। दुनिया की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना के तहत जिला में चिन्हित स्थानों पर गोदामों का निर्माण होना है। उन्होंने अधिकारियों को इस परियोजना को गंभीरता और समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अन्न भंडारण की सुविधा स्थानीय किसानों के लिए लाभदायक साबित होगी। डीसी ने अन्न भंडारण से जुड़े कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग और गति प्रदान करने के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस बीच एआरसीएस बिरेंद्र सिंह ने योजना के तहत जिले में प्रस्तावित गोदामों के निर्माण को लेकर जानकारी दी। उन्होंनें संबंधित अधिकारियों से कार्य की प्रगति सुनिश्चित करते हुए जल्द से जल्द डीपीआर के आधार पर आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए।

उपायुक्त ने कहा कि लक्ष्य यह है कि कम समय में गोदामों का निर्माण कार्य पूरा कराकर इस महत्वाकांक्षी योजना को धरातल पर उतारा जाए, ताकि भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय की पहल सहकारी से समृद्धि को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए योजना को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर डीएफओ साहिती रेड्डी, डीडीपीओ निशा तंवर, तहसीलदार शेखर, सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां झज्जर बिरेंद्र सिंह, एआरसीएस बहादुरगढ़ जीत कुमार भुक्कल, मनोज कुमार के अलावा केंद्रीय भंडारण निगम, राज्य भंडारण निगम, हैफेड व भारतीय खाद्य निगम के अधिकारी उपस्थित थे।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम एक्ट की जिला स्तरीय निगरानी कमेटी की ली बैठक, अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 27 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम एक्ट के तहत जिन भी पीड़ित की शिकायत दर्ज होती है तो उन्हें निर्धारित अवधि में कानून के तहत दी जाने वाली राहत राशि देना सुनिश्चित करें। इस कार्य को समयबद्ध करने के लिए संबंधित विभाग आपसी तालमेल से कार्य करें।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल लघु सचिवालय सभागार में शुक्रवार को अनुसूचित जाति-जनजाति (अत्याचार निवारण अधिनियम एक्ट 1989) की जिला स्तरीय सतर्कता एवं निगरानी कमेटी की बैठक लेकर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दे रहे थे।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि कोई भी राशि लंबित न रखी जाए और नियमों के अनुसार ही राशि प्रदान की जाए। उन्होंने पुलिस विभाग के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि इस अधिनियम के तहत एफआईआर दर्ज होते ही तुरंत उसकी सूचना कल्याण विभाग को दें। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी संबंधित विभाग इस तरह के मामलों में पूरी गंभीरता से कार्य करें।

जिला कल्याण अधिकारी श्वेता शर्मा ने बताया कि 2025-26 में 22 पीड़ित को 35 लाख 20 हजार रुपये की सहायता राशि दी गई हैं।

जिला कल्याण विभाग द्वारा अत्याचार निवारण योजना के प्रचार प्रसार तथा आमजन में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न स्थानों पर होर्डिंग व बैनर भी लगवाए गए है।

बैठक में एसीपी अनिरुद्ध चौहान, प्रोफेसर डॉ सुरेंद्र पूनिया, नवीन देशवाल, अनिल कुमार, देवेंद्र गौड़, श्री ओम सहित संबंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अवैध रूप से प्लॉटिंग के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें विभाग : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने डीटीपी विभाग की मासिक समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

झज्जर, 27 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अवैध कॉलोनियों और अवैध निर्माणों के खिलाफ कार्रवाई में सभी विभाग मिशन मोड में कार्रवाई करें, ताकि किसी भी स्तर पर लापरवाही या देरी न हो। उन्होंने कहा कि अवैध कॉलोनियों को किसी भी सूरत में पनपने नहीं दिया जाएगा और सूचना मिलते ही निर्माण कार्य ध्वस्त किया जाए। डीसी ने शुक्रवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में डीटीपी विभाग की मासिक समीक्षा बैठक में पुलिस विभाग को पहले दर्ज मामलों में त्वरित कार्रवाई करने के आदेश दिए गए। डीसी ने कहा कि डीटीपी (जिला नगर योजनाकार) के साथ सभी संबंधित विभाग राजस्व, पुलिस, पंचायत, नगर निकाय मिलकर कार्य करें। उन्होंने पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि अवैध निर्माण की कार्रवाई के लिए समय पर पुलिस फोर्स उपलब्ध कराई जाए, ताकि प्रशासनिक टीमें बिना किसी बाधा के मौके पर कार्रवाई कर सकें। डीसी ने कहा कि अवैध कॉलोनियों के कारण शहर का योजनाबद्ध विकास बाधित होता है और सरकार को भारी राजस्व नुकसान झेलना पड़ता है। इस अवसर पर डीटीपी अंजू सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

मंत्री अनिल विज के आशीर्वाद से आरती सहगल ने किया विश्वकर्मा नगर में पेयजल ट्यूबवेल का उद्घाटन

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) ऊर्जा, परिवहन व श्रम मंत्री अनिल विज के सहयोग एवं आशीर्वाद तथा वार्ड 18 के पार्षद शाम सुन्दर अरोड़ा और जिला सचिव व पूर्व पार्षद नरेश शर्मा के प्रयासों से वार्ड 14 विश्वकर्मा नगर में पेयजल ट्यूबवेल का शुभारंभ किया गया।

ट्यूबवेल का उद्घाटन जिला सचिव व हरियाणा पावर जेनरेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड की निदेशक आरती सहगल ने नारियल फोड़कर किया। इस अवसर पर पंडित द्वारा विधिपूर्वक पूजा-अर्चना कराई गई।

उल्लेखनीय है कि इस ट्यूबवेल के लिए प्लॉट डॉक्टर अमृतपाल ने अपने पिता स्व. प्रीतम सिंह दर्दी की स्मृति में उपलब्ध कराया, जिसके लिए उपस्थित लोगों ने उनका आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में खेड़ा मंदिर के प्रधान नवजीत जबल, जिला सचिव नरेश शर्मा, शक्ति केंद्र प्रमुख अजय महाजन, अमन जबल, राज कुमार दहिया, मोहित बक्शी, रमेश कतियाल, हरीश साहनी, जतिंदर गंभीर, रंजू वर्मा, सोनाली उप्पल, राधा नागपाल, आशु वालिया, सुरेश शर्मा, राकेश वर्मा, शांति, बद्री प्रसाद, सूरज सोनकर सहित अनेक कार्यकर्ता एवं कॉलोनीवासी उपस्थित रहे।

स्थानीय लोगों ने मंत्री अनिल विज का आभार जताते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना की।

बरवाला शहर में एंट्री-एग्जिट चौक निर्माण को प्रशासनिक मंजूरी, 3.37 करोड़ रुपये खर्च होंगे

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

बरवाला शहर के आंतरिक हिस्से में यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए एंट्री एवं एग्जिट चौक के निर्माण को सरकार की प्रशासनिक मंजूरी मिल गई है। इस परियोजना पर कुल 3.37 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने बताया कि इससे बरवाला शहर में यातायात सुगम होगा, सडक़ सुरक्षा बढ़ेगी और आमजन को बड़ी राहत मिलेगी। यह कार्य बरवाला शहर की इंटरनल सिटी रोड (रोड आईडी 11533) पर किया जाएगा, जिससे शहर में प्रवेश और निकास की व्यवस्था बेहतर होगी और ट्रैफिक जाम की समस्या में राहत मिलेगी। संबंधित अधिकारियों द्वारा प्रस्तावित कार्यों का विवरण प्रस्तुत करने के बाद सरकार से शीघ्र कार्रवाई के लिए अनुरोध किया गया था, जिसे अब मंजूरी मिल गई है।

इस संबंध में विभागीय अधिकारियों ने बताया कि प्रशासनिक मंजूरी मिलने के बाद अब आगे की औपचारिकताएं पूरी कर जल्द ही निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा।

उकलाना अंडरपास बनाने को लेकर उस कार्य में तेजी लाने के लिए व उकलाना में एक्सप्रेस ट्रेनों के ठहराव सहित कई मांगों का ज्ञापन सौंपा

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

सांसद कुमारी सेलजा दिल्ली के निवास पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय सचिव एवं सामाजिक न्याय एवं सुरक्षा मंच के संयोजक डॉ. सुरेन्द्र सेलवाल ने मुलाकात की। डॉ. सेलवाल ने उकलाना निवासियों द्वारा अंडर पास को लेकर दिए जा रहे धरने की विस्तृत जानकारी दी और चर्चा करते हुए उकलाना में अंडरपास बनवाने की आवाज बुलन्द करने के लिए सांसद कुमारी सैलजा का आभार प्रकट किया। वही इसे और गंभीरता से लिए जाने का अनुरोध भी किया। डॉ.सुरेन्द्र सेलवाल ने उकलाना नरवाना टोहाना क्षेत्र के विकास के लिए इस क्षेत्र को जिला बनाने के लिए भी चर्चा की ओर क्षेत्र वासियों की मांग की वजह को समझ पर विचार विमर्श किया वहीं डॉ.सेलवाल सुरेवाला चौक पर एक मेडिकल कॉलेज बनाने की जरूरत पर भी बल दिया गया। सांसद कुमारी सैलजा ने सभी विषयों को जनहित में गंभीरता से कार्य करने के लिए आश्वत किया और जनहित के विषयों पर गम्भीरता दिखाने के लिए आशीर्वाद भी दिया।डॉ. सुरेन्द्र सेलवाल ने उकलाना निवासियों की सुविधा के लिए एक्सप्रेस ट्रैनों का ठहराव करवाने के लिए एक मांग पत्र सौंपा। जिसमें अजमेर - अमृतसर, भावनगर से हरिद्वार, विवेक एक्सप्रेस बांद्रा से जम्मू तवी का ठहराव करवाने की अपील की गई। उनके साथ इस अवसर पर मखनलाल झोदकन व मनोज कुमार भी रहे और कुमारी सैलजा ने तीनों को पार्लियामेंट का भ्रमण भी कराया।

बहुलावन (बाटी) स्थित श्रीव्यास तपोवन में नवनिर्मित श्रीहनुमान मन्दिर का चतुर्दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव 30 मार्च से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

बाटी(मथुरा)। बहुलावन (बाटी) स्थित श्रीव्यास तपोवन (श्रीराम गौ सेवा कुंज) में श्रीराम मित्र मंडल (रजि.) के द्वारा नवनिर्मित श्रीहनुमान मन्दिर में चतुर्दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ठाकुरश्री कौशल किशोर राम मंदिर के महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी की अध्यक्षता व विभिन्न संतों-विद्वानों के पावन सानिध्य में 30 मार्च से 02 अप्रैल 2026 पर्यंत आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि ठाकुरश्री कौशल किशोर महाराज की कृपा एवं साकेतवासी गंगा दास महाराज (पुरी) के आशीर्वाद से आयोजित इस महोत्सव का शुभारंभ 30 मार्च को प्रातः 09 बजे से वेदी पूजन अधिवास व अखंड रामायण पाठ के साथ होगा। 31 मार्च को प्रातः 09 बजे से सायं 07 बजे तक आचार्य डॉ. कुंज किशोर महाराज (गोपाल मन्दिर, मथुरा) के द्वारा वैदिक अधिवास, अखण्ड रामायण पाठ का समापन व सामूहिक सुन्दर काण्ड पाठ आदि के आयोजन होंगे।

01 अप्रैल को सायं 04 बजे से गाजे-बाजे के मध्य भव्य कलश-शोभायात्रा निकाली जाएगी।तत्पश्चात सायं 06 बजे से सरस भजन संध्या का आयोजन होगा।जिसमें श्रीराम लीला के व्यास एवं भजन गायकों द्वारा श्रीहनुमानजी की महिमा से ओत-प्रोत भजनों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि 02 अप्रैल को प्रातः 07 बजे से वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य न्यास प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन होगा।तत्पश्चात 12 बजे से श्रीहनुमानजी महाराज की प्रथम आरती के दिव्य दर्शन होंगे।इसके अलावा 12:30 बजे से महंत सेवा समिति के द्वारा मानस चंचरीक आचार्य कुशदेव चतुर्वेदी को महंताई की चादर ओढ़ाई जाएगी।तदोपरांत मध्यान्ह 01 बजे से सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ महोत्सव का समापन होगा।

महोत्सव की संयोजक श्रीमती कुंजलता चतुर्वेदी एवं आचार्य लवदेव चतुर्वेदी ने सभी से इस महोत्सव में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

लोनी क्षेत्र को संसार का सबसे प्रदुषित क्षेत्र बनवाने मे नगर पालिका परिषद

परिवहन विशेष न्यूज

लोनी क्षेत्र को संसार का सबसे प्रदुषित क्षेत्र बनवाने मे नगर पालिका परिषद लोनी के अधिशासी अधिकारीगण कार्य है जो बार बार जनसुनवाई पोर्टल पर दर्ज शिकायत पर भी आज तक कोई कार्रवाई नही हुई है दिनांक 16सितमबर को दैनिक जागरण अखबार मे खबर पर ग्रीन बेल्ट मे अवैध रूप से अतिक्रमण पर कार्रवाई का आश्वासन दे रहा है और आज दिनांक 27र्माच को दैनिक जागरण अखबार मे फिर ग्रीन बेल्ट पर अवैध अतिक्रमण पर कार्रवाई का आश्वासन दे रहा है लेकिन हकीकत मे करवाई कोई नही हो रही है माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश का उल्लंघन कर रहे है दैनिक जागरण अखबार की दोनो खबर है जनता-जनार्दन भी माननीय मुख्य मंत्री जी के जनसुनवाई पोर्टल पर बार बार शिकायत दर्ज करवाती रही लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नही हुई है साफ-सफाई इंस्पेक्टर बार बार झुटा निस्तारण दिखाकर शिकायत बन्द करता रहा जनता-जनार्दन और सरकार को गुमराह करते रहे जिसका नतीजा आज पुरे संसार के सामने है माननीय मुख्य मंत्री जी को बदनाम करनै मे कोई कसर नही छोड रहे है सिचाई विभाग की पूरी जमीन पर अवैध अतिक्रमण अवैध कारोबार हो रहा है सिचाई विभाग भी प्रदुषण फैलाने का पुरा जिम्मेदार है बार बार शिकायत के बाद भी अभीतक अपनी एक ईंच जमीन खाली नही करवाई है सरकार।

अखाड़ों में भक्तों ने भगवान हनुमान की आराधना श्री राम नवमी को लेकर शहर भर में उल्लास भक्तिमय माहौल मेंअखाड़ों कमेटियों की तैयारी पूरी

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेलाः श्री राम नवमी के पावन अवसर पर पूरे शहर में श्रद्धा,आस्था और उल्लास का अद्भुत माहौल देखने को मिला। मंदिरों में सुबह से ही भक्तों की लंबी कतारें लगी रहीं, जहां भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव को बड़े उत्साह से मनाया गया।वहीं अखाड़ों के पूजा पंडालों में पवन सूत हनुमान बिराजे और भक्तों ने उनकी आराधना की।इसके साथ ही शहर व आखाडा जुलुस की तैयारी पूरी कर ली।

शहर के विभिन्न इलाकों बिसरा चौक,बंडामुंडा, उदितनगर, बसंती कॉलोनी, सिविल टाउनशिप सहित कई क्षेत्रों में मंदिरों से लेकर हनुमान जी के पूजा पंडालों में हनुमान जी की पूजा की गई।वेदव्यास दुर्गा मंडप गली में हनुमान अखाडा की ओर से ढोल बाजे के साथा हनुमान जी की प्रतिमा लाई गई और पंडाल में प्रवेश से पूर्व हनुमान जी का भव्य स्वागत किया गया और जमकर आतिशबाजी की गई,इसी प्रकार लाल बिल्डिंग शिवाजी मार्ग तथा डेली मार्केट जनत निवास लेन के समक्ष हनुमान जी का भव्य स्वागत किये जाने के साथ शुक्रवार की सुबह पूजा अर्चना की गई।।इसी तरह कुम्हार पाड़ा,बिरसा डाहर,डिलक्स लेन व बिसरा चौक समेत सभी पंडालों में हनुमान जी की भव्य प्रतिमा स्थापित कर पूजा अर्चना की गई।इसके साथ ही सभी अखाडा कमेटियों ने 28 मार्च के मुख्य मार्ग के जुलूस को अंतिम तैयारी में देने में जुट गये।पंडालों में

राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान की आकर्षक झांकियां सजाई गईं, जो श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहीं।हनुमान जी के आगमन पर ढोल-नगाड़ों, बैंड-बाजों और "जय श्रीराम" के गगनभेदी नारों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा।

मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना, रामचरितमानस पाठ और भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने व्रत रखकर भगवान श्रीराम की आराधना की और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। कई स्थानों पर हवन और यज्ञ का आयोजन भी किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

महिलाओं और युवाओं की भागीदारी इस बार विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। महिलाओं ने कलश यात्रा में भाग लेकर परंपराओं को जीवंत बनाए रखा, वहीं युवाओं ने शोभायात्राओं के आयोजन और व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाई।

प्रशासन की ओर से भी सुरक्षा और यातायात व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए थे, जिससे सभी कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुए। विभिन्न सामाजिक संगठनों ने जगह-जगह शरबत, पानी और प्रसाद वितरण की व्यवस्था कर सेवा भाव का परिचय दिया।

राम नवमी के इस पावन अवसर पर राउरकेला ने एक बार फिर अपनी सांस्कृतिक एकता, धार्मिक आस्था और सामाजिक सौहार्द की सुंदर मिसाल पेश की।

मलगांव स्थित बरेली बदायूं-हाईवे मार्ग पर तीव्र गति से आ रहे अज्ञात वाहन ने महिला को मारी टक्कर, पुलिस ने महिला को इलाज उपचार हेतु जिला अस्पताल भेजा , जहां चिकित्सकों ने महिला को मृत घोषित किया

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं: बदायूं जिले में दिन गुरुवार की रात्रि तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने बरेली बदायूं हाईवे मार्ग स्थित मलगांव के निकट पैदल सड़क पार कर रही या पैदल चल रही महिला परवीन बानो 48 वर्षीय पति असलम निवासी मुराव गोटिया थाना बिनावर को टक्कर मार दी, जिससे महिला परवीन बानो बुरी तरह घायल हो गई। रहागीरों की सूचना पर पहुंचे थाना बिनावर हेड कांस्टेबल राजीव कुमार, कांस्टेबल शहनवाज, महिला कांस्टेबल सरिता ने मौके पर पहुंचकर एंबुलेंस द्वारा इलाज उपचार हेतु घायल महिला को जिला अस्पताल बदायूं भेज दिया। जहां चिकित्सकों ने महिला परवीन बानो को मृतक घोषित कर दिया गया। इस दौरान महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक महिला परवीन बानो के पति असलम का कहना है कि उसकी पत्नी परवीन बानो घर से मलगांव होते हुए दिल्ली को रवाना हुई थी। पत्नी के मलगांव बरेली-बदायूं हाईवे मार्ग पर पहुंचते ही उन्हें एक तीव्र गति से आ रहे अज्ञात बहन ने टक्कर मार दी थी।

कस्बा बिनावर में रामनवमी पर निकली भव्य शोभायात्राः झांकियां और भजन आकर्षण का केंद्र , रास्ते में लोगों ने फूल बरसाए

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं: जनपद बदायूं के थाना कस्बा बिनावर में रामनवमी के अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। यह शोभायात्रा मोहम्मदपुर बिहार रोड स्थित कस्बा बिनावर शिव मंदिर से शुरू होकर कस्बा के कई मुख्य मार्गों से गुजरी। इसमें कई आकर्षक झांकियां शामिल थीं, जो श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रही।

इस दौरान कस्बा बिनावर में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी शुक्रवार को मंदिर प्रांगण में सुबह 11:00 बजे भजन-कीर्तन शुरू हुए। दोपहर 12:00 बजे प्रभु श्री राम की भव्य आरती के साथ प्रकटोत्सव संपन्न हुआ।

आरती के बाद कस्बा में भव्य शोभायात्रा का शुभारंभ किया गया। इसमें अनेक मनोरम झांकियां, गाजे-बाजे और प्रभु का डोला शामिल था।

शोभायात्रा मंदिर श्री शिव मंदिर जी से प्रारंभ होकर बरेली बदायूं हाईवे मार्ग से होकर, बिलहैत रोड बाजार से होकर राजा बैन महाराज जी पर विश्राम लिया गया।

रामनवमी के अवसर पर कस्बा बिनावर में थाना पुलिस की लापरवाही के चलते 2 घंटे तक लग रहा जाम, इस संबंध में थाना प्रभारी ने कोई जवाब देना उचित नहीं समझा

बदायूं: कस्बा बिनावर में रामनवमी के अवसर पर भारी भीड़ के कारण बरेली बदायूं हाईवे मार्ग पर 2 घंटे तक 2 किलोमीटर लंबा अधिक ट्रैफिक जाम लग गया। इस दौरान जाम में 2 घंटे तक तीन एंबुलेंस, दर्जनों प्राइवेट वाहनों का आगमन हुआ बांधित। इस दौरान थाना बिनावर पुलिस की लापरवाही के चलते घंटो जाम लग रहा यात्रीगण परेशान रहे यहां तक की तीन एंबुलेंस जिसमे मरीज थे वह भी परेशान रहे। इस संबंध में थाना बिनावर प्रभारी निरीक्षक अरिहंत कुमार सिद्धार्थ से संपर्क करना चाहा तो उन्होंने कोई जवाब उचित देना नहीं समझा। कस्बा बिनावर में जाम से संबंधित जानकारी जब राहगीरों से ली गई तो उन्होंने पुलिस प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए। जिससे राहगीरों को जाम को लेकर भारी परेशानी का सामना करना पड़ा भारी।

10 अप्रैल को प्रकाशित होगी अंतिम मतदाता सूची

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण (SIR) अभियान के तहत मतदाता सूची के व्यापक अद्यतन की प्रक्रिया निर्धारित समय सीमा में सफलतापूर्वक पूरी कर ली गई है। प्रशासन ने 6 मार्च तक प्राप्त सभी आवेदनों का निस्तारण कर दिया, जबकि शुक्रवार 27 मार्च को दावे और आपत्तियों के निस्तारण की अंतिम तिथि के अवसर पर शेष सभी मामलों का भी पूरी पारदर्शिता और गंभीरता के साथ निपटारा कर दिया गया। इस प्रक्रिया के पूर्ण होने के साथ ही अब अंतिम मतदाता सूची के प्रकाशन की तैयारी तेज हो गई है, जो 10 अप्रैल 2026 को जारी की जाएगी।

गोरखपुर शहर विधानसभा क्षेत्र में इस अभियान के दौरान कुल लगभग 44 हजार आवेदन (फॉर्म 6, 7 और 8) प्राप्त हुए थे। इनमें नए मतदाता पंजीकरण, मृत या स्थानांतरित मतदाताओं के नाम विलोपन तथा मतदाता विवरण में संशोधन से संबंधित आवेदन शामिल थे। इस पूरी प्रक्रिया की शुरुआत अक्टूबर 2025 में चुनाव आयोग के निर्देशों के अनुसार की गई थी। अभियान का मुख्य उद्देश्य मतदाता सूची को त्रुटिरहित, अद्यतन और अधिक विश्वसनीय बनाना था, ताकि आगामी चुनावों में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या शिकायत की संभावना न रहे। इस दिशा में जिला प्रशासन ने शुरुआत से ही गंभीरता दिखाई।अभियान के अंतिम दिन सदर तहसील स्थित बीआरसी केंद्र पर विशेष सक्रियता देखने को मिली। एआरओ/ एसडीएम सदर दीपक गुप्ता ने स्वयं मौके पर उपस्थित रहकर पूरी प्रक्रिया की निगरानी की। उन्होंने अवकाश की परवाह किए बिना अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए सुनिश्चित किया कि कोई भी दावा या आपत्ति लंबित न रहे। उनके नेतृत्व में अधिकारियों और कर्मचारियों की टीम ने पूरे दिन लगातार कार्य करते हुए सभी शेष मामलों का निस्तारण कर दिया।

अफवाहों पर लगी लगाम पेट्रोल पंपों पर नहीं दिखी भीड़

विनय कुमार मिश्र

गोरखपुर। जनपद में गुरुवार 26 मार्च को ऐसी अफरा तफरी और अफवाह फैली कि सुबह से ही पेट्रोल डीजल के लिए लंबी-लंबी लाइनें लगनी शुरू हो गई और यह लाइन किसी किसी पेट्रोल पंप पर पेट्रोल डीजल खत्म होने तक लगी रहीं । कोई ड्रम में कोई गैलन में कोई बोतलों में पेट्रोल डीजल भरवाते दिखा ।किसी किसी पेट्रोल पंपों पर दोपहर में ही पेट्रोल डीजल खत्म हो गया है।वहीं कहीं कहीं जनपद में एचपी के पेट्रोल पंप तेल के अभाव में बंद हो गए थें ।अफवाह यह भी रही कि कई लोगों द्वारा पेट्रोल डीजल स्टोर करके कई कई लाखों रुपए का रख लिया गया है। गुरुवार को दिन भर अफवाहों का बाजार गर्म रहा । ऐसा लगा कि अगला दिन शुक्रवार को और मुसीबत हो जाएगी। गनीमत रही कि शुक्रवार को पूरा दिन किसी भी पेट्रोल पंपों पर लाइन नहीं दिखी और इक्का-दुक्का लोग रोज की भांति सामान्य तरीके से पेट्रोल पंपों पर आराम से पेट्रोल डीजल भरवाते नजर आए। गुरुवार को पूरे दिन उच्च अधिकारी पेट्रोल पंपों का दौरा करते रहे और लोगों से अपील करते रहे की अफवाहों पर ध्यान ना दें, पेट्रोल डीजल की कोई कमी नहीं है , पहले की तरह ही पेट्रोल डीजल मिलते रहेंगे , घबराकर लाइन न लगाएं । अधिकारियों की सक्रियता और कुछ जागरूक लोगों की वजह से शुक्रवार को न लोगों लाइनें लगाईं, न अफवाह दिखीं, न घबराहट दिखाई दीं ।कुछ सब कुछ सामान्य दिखा ।हालात सामान्य देखकर हर कोई चैन की सांस लिया । आशा है अब कोई अफवाहों पर ध्यान नहीं देगा और सब कुछ सामान्य तरीके से चलता रहेगा।

ब्रोशर से परे: निजी स्कूल शिक्षा की वास्तविकता

● डॉ. विजय गर्ग

अध्ययनों से पता चलता है कि हाल के वर्षों में निजी स्कूलों की फीस में 50% तक की वृद्धि हुई है, जो आय वृद्धि से कहीं अधिक है। कुछ शहरों में नर्सरी शिक्षा पर भी प्रति वर्ष 2.5 लाख रुपये से अधिक की लागत आ सकती है, जो कॉलेज फीस के बराबर है। गरीब परिवारों के लिए, प्रारंभिक शिक्षा व्यय से सम्पूर्ण मासिक आय समाप्त हो सकती है। आज माता-पिता अक्सर महसूस करते हैं कि वे सपने के लिए नहीं, बल्कि केवल स्कूल की फीस का भुगतान करने के लिए बचत कर रहे हैं।

आज के भारत में शिक्षा को एक बुनियादी अधिकार के बजाय निवेश के रूप में देखा जा रहा है। निजी स्कूल, अपने चमकदार ब्रोशर, स्मार्ट कक्षाओं और अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा के साथ, एक उज्ज्वल भविष्य का वादा करते हैं। हालाँकि, इन बड़े दावों के पीछे बढ़ती लागत, असमानता और वास्तविक गुणवत्ता के बारे में प्रश्न की एक जटिल वास्तविकता है।

निजी स्कूलों के बड़े दावे

निजी स्कूल अक्सर खुद को उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके प्रमुख दावों में शामिल हैं

आधुनिक बुनियादी ढांचे के साथ विश्व स्तरीय शिक्षा

उच्च योग्य शिक्षक और अभिनव शिक्षण विधियां

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से समग्र विकास

अंग्रेजी-माध्यम और वैश्विक अनुभव के कारण बेहतर कैरियर अवसर

ये वादे लाखों माता-पिता को आकर्षित करते हैं। वास्तव में, सरकारी स्कूलों के प्रति असंतोष और बेहतर अवसरों की इच्छा के कारण बड़ी संख्या में परिवार निजी शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं।

उच्च और बढ़ती फीस की वास्तविकता

सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा स्कूल फीस में तेजी से वृद्धि है

अध्ययनों से पता चलता है कि हाल के वर्षों में निजी स्कूलों की फीस में 50% तक की वृद्धि हुई है, जो आय वृद्धि से कहीं अधिक है।

कुछ शहरों में नर्सरी शिक्षा पर भी प्रति वर्ष 2.5 लाख रुपये से अधिक की लागत आ सकती है, जो कॉलेज फीस के बराबर है।

गरीब परिवारों के लिए, प्रारंभिक शिक्षा व्यय से सम्पूर्ण मासिक आय समाप्त हो सकती है।

आज माता-पिता अक्सर महसूस करते हैं कि वे सपने के लिए नहीं, बल्कि केवल स्कूल की फीस का भुगतान करने के लिए बचत कर रहे हैं।

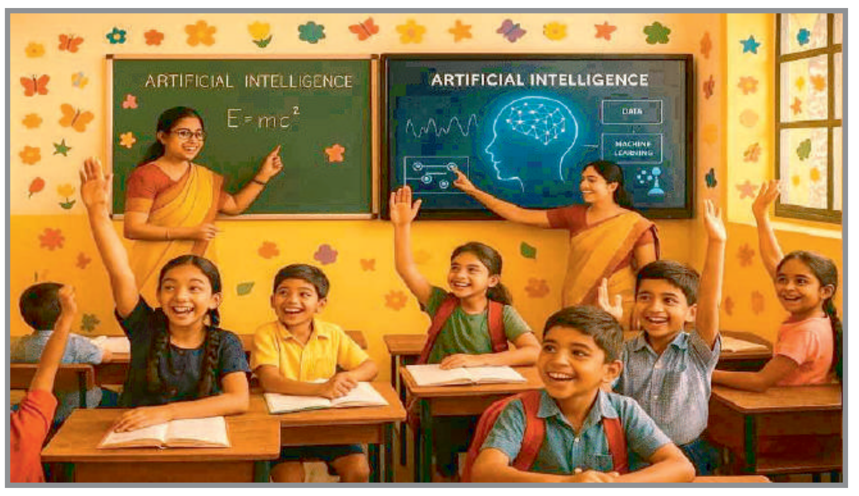

छिपे हुए शुल्क और व्यावसायीकरण

ट्यूशन फीस के अलावा, स्कूल अक्सर कई प्रमुखों से शुल्क लेते हैं

विकास शुल्क

गतिविधि शुल्क

परिवहन और स्मार्ट-क्लास शुल्क

वार्षिक पुनः प्रवेश शुल्क या अभिविन्यास शुल्क

ऐसी प्रथाएं शिक्षा को तेजी से व्यावसायिक बनाती हैं। 2018 में नर्सरी सीटों के लिए अग्रिम भुगतान और गैर-वापसी योग्य शुल्कों की रिपोर्ट ने गंभीर चिंता पैदा कर दी है।

नियमों के बावजूद, पारदर्शिता की कमी एक प्रमुख मुद्दा बना हुआ है, जिसके कारण कुछ राज्यों में अधिकारियों को शुल्क संरचनाओं का पूर्ण खुलासा करने की मांग करनी पड़ रही है। गुणवत्ता बनाम। धारणा

एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है: क्या उच्च शुल्क बेहतर शिक्षा की गारंटी देता है?

शोध से पता चलता है कि सामाजिक-आर्थिक कारकों पर विचार करने पर निजी और सरकारी स्कूलों में सीखने के परिणाम अक्सर समान होते हैं।

कुछ स्कूल वास्तविक शिक्षा की अपेक्षा ब्रांडिंग और स्थिति पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। इससे एक ऐसा भ्रम पैदा होता है, जहां माता-पिता मापनीय शैक्षिक गुणवत्ता के बजाय प्रतिष्ठा के लिए भुगतान करते हैं। परिवारों और समाज पर प्रभाव

महंगी निजी शिक्षा के परिणाम दूरगामी हैं:

वित्तीय बोझ: परिवार फीस का भुगतान करने के लिए आवश्यक खर्चों में कटौती करते हैं

असमानता: गरीब और मध्यम वर्गीय बच्चों को इससे बाहर रखा गया है

मानसिक तनाव: माता-पिता बढ़ती लागत को पूरा करने के लिए लगातार दबाव महसूस करते हैं

सामाजिक विभाजन: शिक्षा क्षमता के बजाय वर्ग का सूचक बन जाती है

विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि अनियंत्रित निजीकरण और उच्च फीस शिक्षा तक समान पहुंच को कमजोर कर सकती है तथा सामाजिक अंतरालों को बढ़ा सकती है।

संतुलन और सुधार की आवश्यकता

मुद्दा निजी स्कूलों को अस्वीकार करने का नहीं बल्कि निष्पक्षता सुनिश्चित करने का है। प्रमुख चरणों में शामिल हैं

पारदर्शी और विनियमित शुल्क संरचनाएं

अधिकारियों द्वारा मजबूत निगरानी

सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता में सुधार

निर्णय लेने में माता-पिता की सक्रिय भागीदारी हाल ही में की गई नीतिगत चर्चाओं और प्रस्तावित कानूनों का उद्देश्य शुल्क में मनमानी वृद्धि को विनियमित करना तथा जवाबदेही बढ़ाना है। निष्कर्ष

निजी स्कूल निस्संदेह भारत की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, उनके बड़े दावों और जमीनी वास्तविकता के बीच की खाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जब शिक्षा एक व्यवसाय बन जाती है, तो इसका मूल उद्देश्य - सीखना और विकास - छाया में आ जाता है।

एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है, जहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ, सस्ती और जवाबदेह हो। यह सिर्फ उन लोगों के लिए विशेषाधिकार नहीं है जो सबसे अधिक कीमत चुका सकते हैं।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कृत्रिम मेधा से बदलती खेलों की दुनिया

डॉ विजय गर्ग

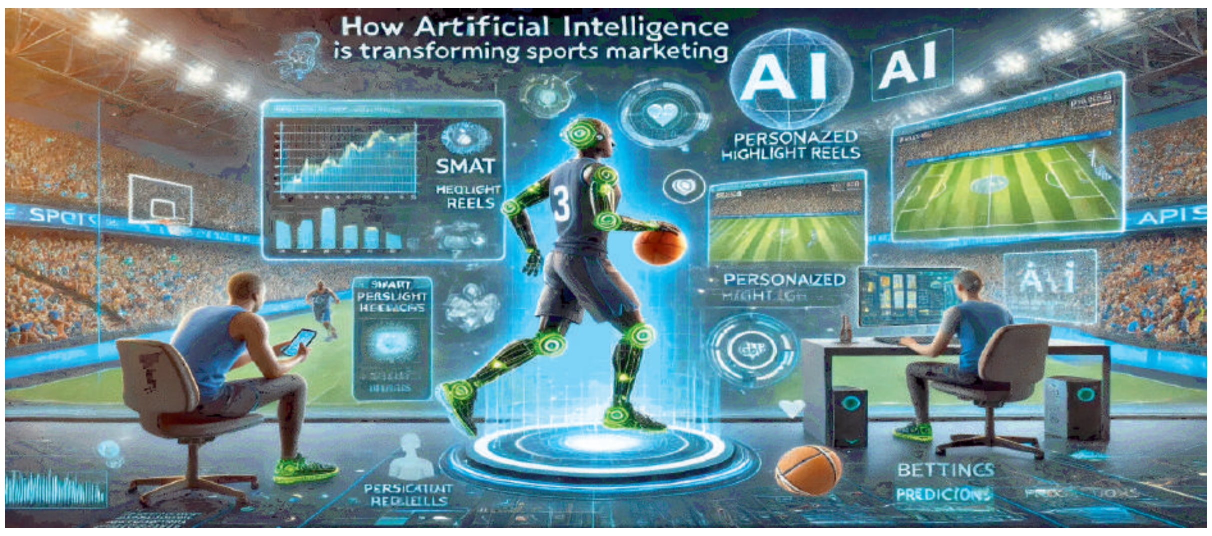

आज का दौर तकनीक का दौर है, और इस तकनीकी क्रांति में कृत्रिम मेधा ने खेलों की दुनिया को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। पहले जहाँ खेल केवल मनोरंजन का साधन थे, वहीं आज वे बुद्धिमत्ता, रणनीति, यथार्थता और व्यक्तिगत अनुभव का अद्भुत मिश्रण बन चुके हैं। एआई ने न केवल खेल खेलने के तरीके को बदला है, बल्कि खेल बनाने और समझने की प्रक्रिया को भी नई दिशा दी है।

परंपरागत खेलों से स्मार्ट गेमिंग तक

शुरुआती वीडियो गेम्स में पात्र तयशुदा नियमों पर चलते थे। वे एक ही तरह की प्रतिक्रिया देते थे और खेल का अनुभव सीमित होता था।

लेकिन AI के आने से यह स्थिति बदल गई है। अब खेलों में मौजूद पात्र (NPCs) खिलाड़ी के व्यवहार को समझते हैं, उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देते हैं और खेल को अधिक रोचक बनाते हैं। यह बदलाव खेलों को अधिक जीवंत और यथार्थवादी बनाता है।

व्यक्तिगत अनुभव और अनुकूलन

एआई की सबसे बड़ी विशेषता है—यह हर खिलाड़ी के अनुसार खेल को बदल सकता है।

खेल का स्तर खिलाड़ी की क्षमता के अनुसार बदलता है

अलग-अलग खिलाड़ियों को अलग अनुभव मिलता है

खेल की कहानी भी खिलाड़ी के निर्णयों के अनुसार बदल सकती है

इससे हर बार खेलना एक नया अनुभव बन जाता है, जो पहले संभव नहीं था।

विशाल और बदलती हुई वर्चुअल दुनिया

एआई की मदद से अब खेलों में बड़ी और लगातार बदलने वाली दुनिया बनाई जा रही है।

नए-नए स्तर अपने आप बनते हैं

हर बार खेल में नया वातावरण मिलता है

खेल की दुनिया अधिक विस्तृत और रोमांचक बनती है

इसे "Procedural Content Generation" कहा जाता है, जो खेलों को अनंत संभावनाओं से भर देता है।

खेल निर्माण में क्रांति

एआई ने केवल खेल खेलने में ही नहीं, बल्कि उन्हें बनाने की प्रक्रिया में भी बड़ा बदलाव किया है।

गेम डिज़ाइन, ग्राफिक्स और एनिमेशन में AI का उपयोग

गेम टेस्टिंग और बग खोजने में तेजी

कम समय और लागत में बेहतर गुणवत्ता वाले खेल

इससे गेम उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है और नए-नए नवाचार सामने आ रहे हैं।

चुनौतियाँ और चिंताएँ

जहाँ एआई ने खेलों को बेहतर बनाया है, वहीं कुछ चिंताएँ भी सामने आई हैं।

कई विशेषज्ञों को डर है कि एआई से रोजगार के अवसर कम हो सकते हैं

कुछ लोग मानते हैं कि इससे मानव रचनात्मकता प्रभावित हो सकती है

गेमर्स कभी-कभी एआई से बने कंटेंट को "कम भावनात्मक" मानते हैं

नई तकनीकों के कारण हार्डवेयर महंगा हो रहा है

भविष्य की दिशा

भविष्य में एआई खेलों को और भी अधिक उन्नत बनाएगा:

ऐसे खेल जहाँ कहानी पूरी तरह AI द्वारा बनाई जाएगी

वर्चुअल पात्र जो इंसानों की तरह सोच और व्यवहार करेंगे

वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी के साथ गहरा जुड़ाव

एआई खेलों को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सीखने और अनुभव करने का माध्यम भी बना सकता है।

निष्कर्ष

कृत्रिम मेधा ने खेलों की दुनिया को एक नए युग में प्रवेश करा दिया है। यह तकनीक खेलों को अधिक बुद्धिमान, आकर्षक और व्यक्तिगत बना रही है।

हालाँकि इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं, लेकिन यदि सही संतुलन बनाए रखा जाए, तो एआई भविष्य में खेलों को और भी रोमांचक और उपयोगी बना सकता है।

अंततः, यह कहना गलत नहीं होगा कि अब खेल केवल खेलने की चीज नहीं रहे—वे एक जीवंत, सोचने वाली और विकसित होती डिजिटल दुनिया बन चुके हैं।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

साहित्यिक आयोजनों में जुगलबंदी का जाल

- डॉ. प्रियंका सौरभ

भारतीय साहित्यिक परिदृश्य सदैव से विविधता, विचारशीलता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रतीक रहा है। यह वह क्षेत्र है जहाँ शब्द केवल रचना नहीं होते, बल्कि समाज के अनुभव, संघर्ष, संवेदनाएँ और परिवर्तन की आकांक्षाएँ भी अभिव्यक्त करते हैं। परंतु वर्तमान समय में साहित्यिक आयोजनों—विशेषकर सरकारी अकादमियों, संस्थानों, फाउंडेशनों और मंत्रालयों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों—को लेकर एक गंभीर प्रश्न खड़ा हो रहा है: क्या ये मंच वास्तव में प्रतिभा और सृजनशीलता के आधार पर संचालित हो रहे हैं, या फिर 'जुगलबंदी' और 'नेटवर्किंग' ही इनके वास्तविक निर्धारक बन चुके हैं?

आज यह धारणा तेजी से मजबूत हो रही है कि इन आयोजनों में भागीदारी का अवसर उन्हीं लोगों को मिलता है, जिनकी आयोजकों, चयनकर्ताओं या संबंधित पदाधिकारियों से निकटता होती है। यह निकटता कई रूपों में सामने आती है—व्यक्तिगत संबंध, वैचारिक समानता, संस्थागत जुड़ाव या वर्षों से बनी आपसी 'समझदारी'। परिणामस्वरूप, एक सीमित समूह बार-बार मंचों पर दिखाई देता है, जबकि बड़ी संख्या में प्रतिभाशाली और समर्पित रचनाकार अवसरों से वंचित रह जाते हैं।

यह स्थिति केवल एक प्रशासनिक विसंगति नहीं, बल्कि साहित्य के मूल स्वभाव के विपरीत है। साहित्य का उद्देश्य ही है—समाज के विविध अनुभवों को स्थान देना, नए स्वरों को पहचानना और अभिव्यक्ति के नए आयामों को प्रोत्साहित करना। जब मंच सीमित लोगों तक सिमट जाते हैं, तो साहित्य की यह व्यापकता संकुचित होने लगती है। यह एक प्रकार का 'सांस्कृतिक केंद्रीकरण' है, जहाँ अवसर और मान्यता कुछ हाथों में केंद्रित हो जाते हैं।

नई पीढ़ी के लेखकों और रचनाकारों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से निराशाजनक है। आज का युवा लेखक अपनी रचनात्मकता के बल पर आगे बढ़ना चाहता है, लेकिन जब उसे यह महसूस होता है कि मंच तक पहुँचने के लिए 'सही लोगों' से संपर्क होना अधिक आवश्यक है, तो उसका उत्साह क्षीण होने लगता है। यह न केवल उसकी व्यक्तिगत यात्रा को प्रभावित करता है, बल्कि साहित्यिक परंपरा की निरंतरता को भी बाधित करता है।

इसके अतिरिक्त, यह प्रवृत्ति साहित्यिक विमर्श की गुणवत्ता को भी प्रभावित करती है। जब एक ही समूह के लोग बार-बार मंचों पर उपस्थित होते हैं, तो विचारों में विविधता घट जाती है। नए दृष्टिकोण, नए अनुभव और नई भाषिक शैलियाँ सामने नहीं आ पातीं। परिणामस्वरूप, साहित्य में एक प्रकार का ठहराव आ जाता है और वह समाज के बदलते स्वरूप को पूर्णतः प्रतिबिंबित नहीं कर पाता।

यह समस्या केवल साहित्य तक सीमित नहीं है; कला, संस्कृति और शिक्षा जैसे अन्य क्षेत्रों में भी 'नेटवर्किंग' और 'जुगलबंदी' की यह प्रवृत्ति दिखाई देती है। परंतु साहित्य जैसे संवेदनशील और वैचारिक क्षेत्र में इसका प्रभाव अधिक गहरा होता है, क्योंकि यहाँ केवल अवसर ही नहीं, बल्कि विचारों की दिशा भी प्रभावित होती है।

हालाँकि, यह कहना भी एकतरफा होगा कि सभी संस्थान और आयोजन इसी प्रवृत्ति से ग्रस्त हैं। कई ऐसे उदाहरण भी हैं, जहाँ आयोजकों ने पारदर्शिता और निष्पक्षता को प्राथमिकता दी है। खुले आमंत्रण (ओपन कॉल), स्पष्ट चयन प्रक्रिया और नए रचनाकारों को मंच देने की पहल—ये सभी सकारात्मक संकेत हैं। लेकिन ऐसे प्रयास अभी भी व्यापक प्रवृत्ति का रूप नहीं ले सके हैं। समाधान की दिशा में सबसे पहला और आवश्यक कदम है—पारदर्शिता। आयोजनों में भागीदारी के लिए स्पष्ट और सार्वजनिक मानदंड निर्धारित किए जाने चाहिए। चयन प्रक्रिया में विविधता सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि किसी एक समूह या विचारधारा का वर्चस्व स्थापित न हो। निर्णायक मंडल में विभिन्न पृष्ठभूमियों के विशेषज्ञों को शामिल करना इस दिशा में एक प्रभावी कदम हो सकता है।

इसके साथ ही, नए और उभरते रचनाकारों के लिए विशेष मंच तैयार किए जाने चाहिए। 'ओपन कॉल' के माध्यम से आवेदन आमंत्रित करना, लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन करना और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करना—ये सभी उपाय अवसरों को अधिक समावेशी बना सकते हैं। तकनीक ने भौगोलिक सीमाओं को काफी हद तक समाप्त कर दिया है; अब आवश्यकता है कि इसका उपयोग साहित्यिक लोकतंत्र को सशक्त बनाने में किया जाए।

साहित्यिक समुदाय की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। केवल आयोजकों पर प्रश्न उठाना पर्याप्त नहीं है; रचनाकारों, आलोचकों और पाठकों को भी इस विषय पर सजग और सक्रिय होना होगा। मौन स्वीकृति किसी भी व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाती है, जबकि सजग संवाद परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है।

मीडिया और सामाजिक मंच भी इस संदर्भ में अहम भूमिका निभा सकते हैं। यदि इन मुद्दों को व्यापक स्तर पर उठाया जाए, तो संस्थानों पर सकारात्मक दबाव बनेगा। साथ ही, निष्पक्ष और पारदर्शी आयोजनों के उदाहरणों को सामने लाना भी आवश्यक है, ताकि एक स्वस्थ और प्रेरणादायक मॉडल विकसित हो सके।

अंततः, यह समझना आवश्यक है कि साहित्य केवल कुछ लोगों का मंच नहीं है; यह समाज की सामूहिक चेतना का दर्पण है। यदि इस दर्पण पर 'जुगलबंदी' की परत चढ़ जाएगी, तो प्रतिबिंब भी विकृत दिखाई देगा। साहित्य की आत्मा उसकी स्वतंत्रता, विविधता और निष्पक्षता में निहित है।

समय की माँग है कि हम इस प्रवृत्ति को पहचानें, उस पर खुलकर चर्चा करें और सुधार की दिशा में ठोस कदम उठाएँ। यदि हम आज सजग नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें इस असंतुलन के लिए उत्तरदायी ठहराएँगी।

इसलिए अब आवश्यक है कि साहित्यिक आयोजनों को 'अपनों के उत्सव' की सीमाओं से निकालकर 'सार्वजनिक मंच' बनाया जाए—जहाँ हर प्रतिभा को समान अवसर मिले, हर स्वर को अभिव्यक्ति का अधिकार हो, और साहित्य अपनी वास्तविक गरिमा के साथ समाज का मार्गदर्शन कर सके।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

भूलने का फलसफा

डॉ विजय गर्ग

मानव जीवन स्मृतियों और अनुभवों का संग्रह है। हम जो देखते हैं, सुनते हैं, सीखते हैं—सब कुछ हमारे मन में कहीं न कहीं दर्ज हो जाता है। लेकिन क्या केवल याद रखना ही जीवन का सार है? नहीं। जीवन को संतुलित और शांत बनाने के लिए "भूलना" भी उतना ही आवश्यक है जितना "याद रखना"। यही है भूलने का फलसफा।

भूलना कमजोरी नहीं, शक्ति है

अक्सर हम भूलने को कमजोरी मानते हैं, जबकि सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत है। कुछ बातों को भूल जाना मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी होता है।

दुखद घटनाएँ, असफलताएँ, अपमान—यदि हम इन्हें हमेशा याद रखते हैं, तो यह हमारे मन को बोझिल बना देते हैं। ऐसे में भूलना हमें आगे बढ़ने की ताकत देता है। यह मन को हल्का करता है और नई शुरुआत के लिए जगह बनाता है।

अतीत का बोझ और वर्तमान का नुकसान

मनुष्य का एक स्वभाव है—वह अतीत में जीता रहता है। पुरानी गलतियाँ, बीते हुए दुख, अधूरी इच्छाएँ—ये सब वर्तमान की खुशी छीन लेते हैं।

भूलने का फलसफा हमें सिखाता है कि जीवन वर्तमान में जीने का नाम है। जो बीत गया, उसे पकड़कर रखने से न तो वह वापस आता है और न ही जीवन बेहतर होता है।

क्षमा और भूलना—दोनों का संबंध

भूलना और क्षमा करना एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब हम किसी को माफ करते हैं, तो वास्तव में हम उस घटना को अपने मन से हटाने का प्रयास करते हैं।

यदि हम क्षमा तो कर दें, लेकिन भूलें नहीं, तो मन में कड़वाहट बनी रहती है। इसलिए सच्ची शांति तभी मिलती है जब हम न केवल माफ करें, बल्कि भूल भी जाएँ।

भूलना सृजन का मार्ग

भूलना केवल दुखद चीजों तक सीमित नहीं है। यह हमें नई सोच अपनाने में भी मदद करता है।

पुरानी धारणाओं को भूलकर हम नए विचार सीखते हैं

गलतियों को पीछे छोड़कर हम बेहतर निर्णय लेते हैं

असफलताओं को भूलकर हम फिर से प्रयास करने का साहस जुटाते हैं

इस तरह भूलना विकास और सृजन का मार्ग बन जाता है

क्या सब कुछ भूल जाना चाहिए?

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है—क्या हमें सब कुछ भूल जाना चाहिए?

नहीं। जीवन में कुछ बातें याद रखना भी जरूरी है—

अनुभवों से मिली सीख

अपने मूल्यों और सिद्धांतों को

रिश्तों की अहमियत

भूलने का अर्थ यह नहीं कि हम सीख को खो दें, बल्कि यह है कि हम दर्द और नकारात्मकता को छोड़ दें।

भूलने की कला कैसे सीखें?

भूलना एक अभ्यास है, जो धीरे-धीरे विकसित होता है।

वर्तमान में जीने की आदत डालें

सकारात्मक सोच अपनाएँ

ध्यान (मेडिटेशन) करें

अनावश्यक बातों पर अधिक सोचने से बचें

इन उपायों से मन शांत होता है और भूलने की प्रक्रिया आसान हो जाती है।

निष्कर्ष

भूलने का फलसफा हमें जीवन को सरल और संतुलित बनाने की राह दिखाता है। यह सिखाता है कि हर चीज को पकड़कर रखना जरूरी नहीं होता। कुछ बातों को छोड़ देना ही जीवन की सबसे बड़ी समझदारी है।

जब हम दुख, असफलता और कड़वाहट को भूलना सीख जाते हैं, तभी हम सच्चे अर्थों में स्वतंत्र और प्रसन्न जीवन जी पाते हैं।

आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी भुवनेश्वर पहुंचे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ओडिशा में। आर्मी चीफ उपेंद्र द्विवेदी एयर फोर्स की स्पेशल फ्लाइट से भुवनेश्वर एयरपोर्ट पहुंचे हैं। भुवनेश्वर पहुंचने के बाद वे कड़ी सुरक्षा में 120 बटालियन के लिए रवाना हुए। बटालियन में रात रुकने और खाने का प्रोग्राम है। आर्मी चीफ ओडिशा के 3 दिन के दौरे पर हैं। आर्मी चीफ जनरल भुवनेश्वर, पुरी और गोपालपुर में अलग-अलग प्रोग्राम में शामिल होंगे। कल वे पुरी और गोपालपुर में होने वाले अलग-अलग प्रोग्राम में शामिल होंगे। वे भगवान जगन्नाथ के दर्शन करने पुरी जाएंगे। बाद में वे स्पेशल फ्लाइट से गोपालपुर जाएंगे। वे आर्मी एयर डिफेंस कॉलेज जाएंगे और वहां आर्मी ट्रेनिंग सिस्टम का रिव्यू करेंगे। वे आर्मी ऑफिसर और पुराने सैनिकों से बातचीत करेंगे। फील्ड फायरिंग रेंज में लाइव फायरिंग डेमोंस्ट्रेशन होना है। आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी 29 तारीख को दिल्ली लौटेंगे।

गाजुलाराम स्थित भोलेनाथ ग्रुप द्वारा श्रीराम नवमी पर गाजुलारामराम सर्कल के समीप छांछ का वितरण किया गया। अवसर पर मंगलराम पंवार, बंसीलाल प्रजापति, हरि सिंह राठौड़, दुर्गाराम मुलेवा, अशोक हाम्बड़, जोराराम सोलंकी, दिनेश सेपटा, सुरेश मुलेवा, ओमप्रकाश , दिलीप, जोगाराम, श्रवण, संजू व अन्य ने सेवा प्रदान की।

टीचर्स ऑफ बिहार" की अभिनव पहल: 'प्रज्ञानिका' का भव्य प्रकाशन

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। बिहार दिवस के पावन अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में ₹टीचर्स ऑफ बिहार₹ द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका "प्रज्ञानिका" के द्वितीय खंड के प्रथम अंक का भव्य प्रकाशन किया गया। यह पत्रिका राज्य के शिक्षा जगत में नवाचार, संवाद और रचनात्मकता को बढ़ावा देने की दिशा में एक सशक्त कदम मानी जा रही है।

गरिमामय समारोह में हुआ औपचारिक प्रकाशन

पटना में आयोजित एक भव्य समारोह में पत्रिका की संपादन टीम द्वारा शिक्षा विभाग बिहार सरकार के शीर्ष अधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों को "प्रज्ञानिका" की प्रथम प्रति सादर भेंट की गई।

प्रति भेंट प्राप्त करने वाले प्रमुख अधिकारीः- विक्रम विरकर, निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, नवीन कुमार, राज्य परियोजना निदेशक, बीईपीसी, उदय कुमार उज्जवल, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, बीईपीसी, साकेत रंजन, जिला शिक्षा पदाधिकारी पटना, बैद्यनाथ यादव, पूर्व सचिव शिक्षा विभाग। सभी अधिकारियों ने पत्रिका की सराहना करते हुए इसे शिक्षकों के सशक्तिकरण और शिक्षा सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण मंच बताया।

समर्पित संपादन टीम की मेहनत

"प्रज्ञानिका" की सफलता के पीछे एक समर्पित टीम का योगदान हैः

प्रधान संपादकः डॉ. चंदन श्रीवास्तव, सह संपादकः शुभी श्रीवास्तव, मुजफ्फरपुर एवं डॉ. पूनम कुमारी, सिवान

पाठ शोधकः डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय, अरवल

तकनीकी सहयोगः ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

संस्थापक एवं मार्गदर्शकः शिव कुमार, पटना

सहयोगी सदस्यः अनुपमा प्रियदर्शिनी, सिवान, मृत्युंजयम्, कटिहार, रंजेश कुमार, अररिया, मधु प्रिया, पूर्णिया, मृत्युंजय कुमार, पूर्वी चम्पारण, केशव कुमार, मुजफ्फरपुर, अजय कुमार मीत, अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर पुष्पा प्रसाद, गोपालगंज।

संस्थापक एवं टीम का संयुक्त बयान

"टीचर्स ऑफ बिहार₹ के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि "प्रज्ञानिका हमारे शिक्षकों की रचनात्मकता और नवाचार का आईना है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक आंदोलन है, जो शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। हमें विश्वास है कि यह मंच आने वाले समय में और अधिक प्रभावशाली बनेगा और राज्य के हर शिक्षक व छात्र को प्रेरित करेगा।"

उक्त जानकारी टीचर्स ऑफ बिहार के प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार एवं इवेंट लीडर सह मुजफ्फरपुर जिले के मुरौल प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव ने संयुक्त रूप से दी।

महिलाओ को सम्मान समारोह कार्यक्रम मे आने का आह्वान

झरिया, झारखण्ड मानव कल्यान सोसाईटी के अध्यक्ष रामा शीष चौहान जी के सौजन्य से धनबाद नगर निगम के नव निर्वाचीत उप मेयर माननीय अरूण कुमार चौहान जी का नागरीक अभिनन्द कारियक्रम को सफल बनाने के लिये, झारखण्ड आईडीयल, स्वेता किन्नर को निमंत्रण देते हुये पुरे वंचित समाज की महिलाओ को सम्मान समारोह कार्यक्रम मे आने का आह्वान किये। वंचित समाज की महिलाओ को आर्थीक अजादी के लिये निः शुल्क सिलाई कटाई प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के लिये बिचार बिमर्श किया जायेगा। समाज सेवी महिलाओ और षरूसो को वस्त्र देकर सम्मानीत कुया जायेगा। कार्यक्रम मे उपस्थीत रहेंगे, झारखण्ड मुक्ती मोर्चा के धनबाद जिला उपाध्यक्ष हरेन्द्र चौहान नगर अध्यक्ष मण्टू चौहान, उपाध्यक्ष मदन राम, झारखण्ड कोलियारी मजदूर नेता ऊमा शंकर चौहान, वंचित मुक्ती मोर्चा के झारखण्ड प्रदेश अध्यक्ष आशोक कुमार पाण्डे, महा सचिव सुनील कुमार वर्मण, सचिव राजेश गोस्वामी, चौहान समाज के बरिष्ट नेता बिहारी लाल चौहान, अशोक चौहान, संत चौहान, अधिवक्ता हिरा लाल चौहान कई गण मान्य लोग उपस्थीत रहेंगे।

8 वर्षीय मासूम प्रज्ञा हत्याकांड से दहला आगरा, उपेन्द्र सिंह ने पीड़ित परिवार को दिया न्याय का भरोसा

राज्यमंत्री असीम अरुण से कराई बातचीत, दोषियों पर सख्त कार्रवाई और हर संभव सहायता का आश्वासन

आगरा। ताजगंज क्षेत्र स्थित सिद्धार्थ नगर, गोबर चौकी में 8 वर्षीय मासूम प्रज्ञा की निर्मम हत्या ने पूरे इलाके को गहरे शोक में डुबो दिया है। इस दर्दनाक घटना ने न केवल स्थानीय लोगों, बल्कि पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया है।

घटना की जानकारी मिलते ही भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह पीड़ित परिवार के घर पहुंचे। उन्होंने परिजनों से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया और इस कठिन समय में हर संभव साथ देने का भरोसा दिलाया।

उपेन्द्र सिंह ने कहा कि यह घटना अत्यंत दुखद और असहनीय है, और इसमें शामिल दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने के लिए हर स्तर पर प्रयास किए जाएंगे। इस दौरान उपेन्द्र सिंह ने अपने फोन के माध्यम से समाज कल्याण राज्यमंत्री असीम अरुण से पीड़िता के पिता दिनेश कुमार की सीधी बातचीत भी कराई। मंत्री असीम अरुण ने परिवार को आश्वस्त किया कि मामले में दोषियों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई की जाएगी और सरकार की ओर से हर संभव आर्थिक व सामाजिक सहायता प्रदान की जाएगी।

घटना को लेकर स्थानीय लोगों में भी भारी आक्रोश और दुख देखा गया। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी कर उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके।

इस गहरे शोक की घड़ी में समाजसेवी सुरेंद्र जाटव और प्रेम चंद सोन सहित कई गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

सात दिवसीय विशेष शिविर का भव्य समापन, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बांधा समां

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। गंगोत्री देवी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन शुक्रवार को उत्साह, संवेदना और सांस्कृतिक रंगों से भरे वातावरण में हुआ। सात दिनों तक चले इस शिविर ने छात्राओं को समाज सेवा के साथ-साथ जिम्मेदारी, अनुशासन और नेतृत्व का व्यावहारिक अनुभव दिया।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में रीना त्रिपाठी उपस्थित रहीं। विशिष्ट अतिथि आशुतोष मिश्र की मौजूदगी ने कार्यक्रम को और प्रेरक बनाया, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. गौरी पांडेय ने की।

मुख्य अतिथि रीना त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सेवा का भाव ही व्यक्ति को समाज से जोड़ता है और उसे एक बेहतर इंसान बनाता है। उन्होंने कहा कि इस तरह के शिविर छात्राओं को जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराते हैं और उनमें संवेदनशीलता तथा जिम्मेदारी का विकास करते हैं।

विशिष्ट अतिथि आशुतोष मिश्र ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि शिविर में सीखी गई बातें तभी सार्थक होंगी, जब उन्हें दैनिक जीवन में उतारा जाए। उन्होंने कहा कि समाज में परिवर्तन छोटे-छोटे प्रयासों से ही शुरू होता है और हर व्यक्ति इसमें अपनी भूमिका निभा सकता है। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. गौरी पांडेय ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राओं के व्यक्तित्व को निखारने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि अनुशासन, टीमवर्क और सामाजिक चेतना इस शिविर की सबसे बड़ी उपलब्धियां रही हैं।

शिविर के दौरान छात्राओं ने गांवों और आसपास के क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण और शिक्षा प्रसार जैसे कार्य किए। समापन अवसर पर इन गतिविधियों की झलक प्रस्तुत की गई, जिसे सभी ने सराहा।

आप और हम मित्र मंडल द्वारा मां भगवती का जगराता कराया गया

परिवहन विशेष न्यूज

बी एस ए कालेज स्थित आनन्दपुरी में आप और हम मित्र मंडल द्वारा अष्टमी तिथि पर मां भगवती का जगराता कराया गया मोनू जागरण मुजूकियल गुरुप द्वारा गणेश वंदना, शारदा वंदना, के साथ माता के भजनों से पर्वत पर बजो है नगाड़ों मेरी मईया को माता जिनको याद करे वो लोग निराले होते हैं माता जिनका नाम पुकारे वो किस्मत वाले होते हैं, चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है, ऐसे ही भजनों से पुरा पांडाल झूम उठा आप और हम मित्र मंडल की तरफ से सभी भक्तजनों का और मोनू मुजूकियल गुरुप का दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया राधा-कृष्ण, भोलेनाथ पार्वती, काली मां एवं दुर्गा शक्ति की झांकी ने भक्तों का मन मोह लिया मीडिया प्रभारी विकास खत्री ने बताया कि सभी भक्तों के सहयोग से मां भगवती का जगराता कराया जा रहा है ऐसी आशा करते हैं कि माता का जगराता हर साल होता रहें प्रमोद कुमार ने बताया कि ज्वाला मईया की ज्योति में साक्षात दर्शन देने आई अमरसिंह राजपूत ने बताया कि धार्मिक आयोजनों से वातावरण शुद्ध रहता है श्री पंच दशानामि जूना अखाड़ा से साध्वी मीरा गिरी ने बताया कि सुन्दर भजनों एवं झाकीयो ने महीलाओं एवं बच्चों को नाच कुदकर हाजरी लगवाई नीरु भाभी ने बताया कि ऐसे कार्यक्रमों से आपसी भाईचारा बढ़ता है सुबह चार बजे तारा रानी की कथा का रहस्य बताया उसके बाद महामाई की आरती कराई बाद में हलुआ चना का प्रसाद वितरण किया गया इस अवसर पर श्री पंच दशानामि जूना अखाड़ा से साध्वी मीरा गिरी, प्रमोद कुमार, अमरसिंह राजपूत, मीडिया प्रभारी विकास खत्री, शुशील गौतम, नीरु भाभी, मोर मुकुट व्यास जी, बालकृष्ण जी, उदय ब्रजवासी, योगेश योगी, मिंटू गोला, राहुल कुमार, मुकेश गोला, हरिवंश, लक्की, विमला देवी, दिनेश चौधरी, ममता भाभी, योगेश चौरसिया, बिहारी राजपूत, पवन पांडेय, बेनी गोला, मिंटू गोला, लाला, एवं भक्तगण उपस्थित रहे ।

विकास खत्री

राजस्थान जिला पाली मारवाड़ सोजत सिटी रायरा कला स्थित चामुंडा माताजी मंदिर आयोजित चैत्र नवरात्रि महोत्सव तहत शुक्रवार को हवन का आयोजन किया गया शुभ मुहूर्त में भेरुजी का मंदिर भूमि पूजन न्यू मुहूर्त किया गया इस अवसर पर भोपाजी श्री चंद्राराम गुर्जर, मोटाराम , आसुराम , कप्ताराम भोपाजी, लाभूराम, भमसा करमावास ,हरलाल , बुधराम की गीड़ खैड़ा देव गढ, सुखराम लक्ष्मण ,महेंद्र राम, केसाराम, गोरधन,भलाराम अन्य उपस्थित रहे

हेमन्त सोरेन एवं कल्पना सोरेन ने तपोवन मंदिर में राम जानकी की पूजा की

प्रभु श्री राम के आदर्शों को हम सभी अपने जीवन में करें आत्मसात : मुख्यमंत्री

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला , मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन अपनी धर्मपत्नी विधायक कल्पना सोरेन संग रामनवमी पर्व के पावन अवसर पर आज राम जानकी तपोवन मंदिर , निवारणपुर, रांची में पूरे विधि- विधान से पूजा- अर्चना की। इस अवसर पर उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के चरणों में शीश नवाकर राज्य की उन्नति, सुख-शांति और खुशहाली की कामना की। मुख्यमंत्री ने राज्य वासियों को रामनवमी महापर्व की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भगवान श्री राम आप सभी की मनोकामनाएं पूरी करें, यही मंगलकामना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि रामनवमी महापर्व के अवसर पर रांची के राम जानकी तपोवन मंदिर में हर वर्ष की भांति इस बार भी आस्था के समागम में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आज यहां पूजा अर्चना के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु आ रहे हैं। विभिन्न अखाड़ों की शोभायात्रा का आज यहां समागम भी हो रहा है। ऐसे में पूरी श्रद्धा, उमंग, उत्साह और खुशी के साथ इस पर्व को मनाते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करें और सामाजिक सद्भाव और समरसता के साथ रामनवमी महापर्व को ऐतिहासिक और यादगार बनाएं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि तपोवन मंदिर का इतिहास काफी पुराना है ।इसकी एक अलग पहचान है ।अब इसी पहचान को और मजबूत बनाने की दिशा में हमने कदम बढ़ा दिया है। मंदिर के सौंदर्यीकरण जा कार्य तेजी से चल रहा है। हम सभी भगवान राम से कामना करें कि इस मंदिर को भव्यता देने का काम जल्द से जल्द पूर्ण हो।

इसके पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अपनी विधायक पत्नी कल्पना सोरेन के साथ सीएम आवास स्थित तुलसी के समीप हनुमान मंदिर में पूजा अर्चना की । मुख्यमंत्री ने बजरंगबली का ध्वज भी फहराया ।

बालाजी नगर स्थित श्री आईजी गौशाला में श्री राम नवमी पर गौ सम्मान आहान अभियान कार्यक्रम शुरू श्री आईजी गौशाला से किसरा,चिरीयाला ,बंडलागुडा में प्रचारक मंगलाराम पंवार, भंवरलाल मुलेवा,पुकाराज मुलेवा, ओमप्रकाश काग व गौभक्त उपस्थित रहे

सफाई मजदूर यूनियन, भारतीय मजदूर संघ से संबंधित, नगर निगम अमृतसर द्वारा प्रधान श्री बलविंदर सिंह शेर गिल के नेतृत्व में मेयर नगर निगम अमृतसर श्री जतिंदर सिंह भाटिया को एक मांग पत्र सौंपा गया।

अमृतसर, 27 मार्च (साहिल बेरी)

इस मौके पर यूनियन की जनरल सेक्रेटरी श्रीमती हरजिंदर कौर सहोता, कर्मचारी महासंघ के राष्ट्रीय अधिकारी श्री दलबीर सिंह लावे, मीत सचिव दीपक कुमार और ऑफिस सचिव युद्धवीर सहोता भी उपस्थित थे। मांग पत्र में मुख्य रूप से नगर निगम अमृतसर में सफाई सेवकों की भर्ती की मांग उठाई गई। यूनियन प्रतिनिधियों ने बताया कि सफाई कर्मचारियों की कमी के कारण काम प्रभावित हो रहा है, जिसे जल्द पूरा करना बहुत जरूरी है। इस संबंध में मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने यूनियन को आश्वासन दिया कि नगर निगम में जल्द ही सफाई सेवकों की भर्ती की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि नगर निगम के सभी कर्मचारियों की तनख्वाह ऑनलाइन करने की प्रक्रिया भी शुरू की जाएगी, ताकि कर्मचारियों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

रामनवमी शोभायात्रा में दो समुदायों के बीच झारखंड के गढ़वा में झड़प , पथराव

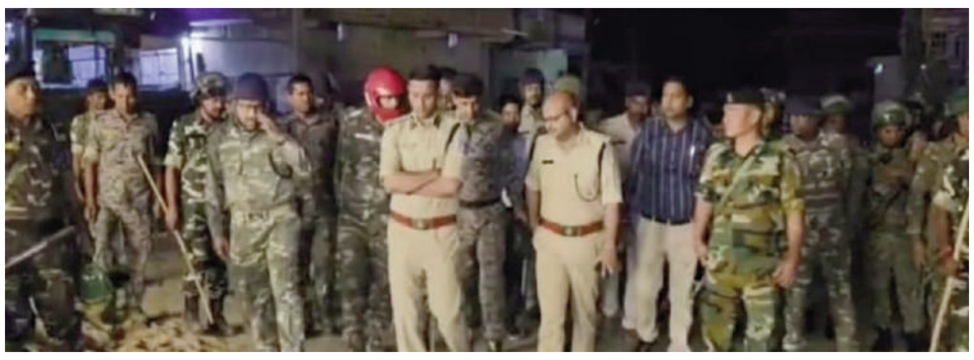

बीस गिरफ्तार, आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े ।एस पी , डीआईजी ने संभाला मोर्चा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के गढ़वा जिले में गुरुवार को रामनवमी शोभायात्रा के दौरान दो समुदायों में हिंसक झड़प हो गई। दोनों तरफ से काफी पथराव हुआ। पुलिस ने अगले दिन 20 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। फिलहाल इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और तनाव को कम करने की कोशिशें जारी हैं।रामनवमी उत्सव के महाष्टमी दिवस पर एक विशेष समुदाय के एक समूह ने धार्मिक ध्वज फहराने और पटाखे फोड़ने पर आपत्ति जताई। इस मुद्दे पर हुई कहासुनी जल्द ही हिंसक हो गई और पुलिस के स्थिति को शांत करने के प्रयासों के बावजूद दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया ।रामनवमी उत्सव के महाष्टमी दिवस पर एक विशेष समुदाय के एक समूह ने धार्मिक ध्वज फहराने और पटाखे फोड़ने पर आपत्ति जताई। इस मुद्दे पर हुई कहासुनी जल्द ही हिंसक हो गई और पुलिस के स्थिति को शांत करने के प्रयासों के बावजूद दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया । भीड़ को तीतर बितर करने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छड़ने पड़े।

जहाँगीर पुरी में पीडब्ल्यूडी के नालों को ढकने की मांग तेज

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जहाँगीर पुरी ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आई एवं जे ब्लॉक) के अध्यक्ष एम. एल. भास्कर ने क्षेत्र में पीडब्ल्यूडी के खुले नालों को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की है।

उन्होंने कहा कि जहाँगीर पुरी के विभिन्न हिस्सों, विशेषकर मुख्य मार्गों और रिहायशी इलाकों में खुले नाले लोगों के लिए गंभीर खतरा बने हुए हैं। आए दिन इन नालों के कारण दुर्घटनाएं हो रही हैं। कई बार आवारा पशु इन नालों में गिर जाते हैं, जिससे उनकी जान तक चली जाती है, वहीं छोटे बच्चों और बुजुर्गों के लिए यह स्थिति अत्यंत जोखिमपूर्ण बनी हुई है।

भास्कर ने आगे बताया कि इन खुले नालों से उठने वाली दुर्गंध और गंदगी के कारण क्षेत्र में बीमारियों का खतरा भी लगातार बढ़ रहा है, जिससे स्थानीय निवासियों का जीवन प्रभावित हो रहा है।

उन्होंने संबंधित विभाग पीडब्ल्यूडी से मांग करते हुए कहा कि सभी खुले नालों को प्राथमिकता के आधार पर जल्द से जल्द ढका जाए, ताकि क्षेत्रवासियों को राहत मिल सके और किसी भी अप्रिय घटना से बचा जा सके।

उन्होंने चेतावनी दी कि यदि इस समस्या का शीघ्र समाधान नहीं किया गया, तो क्षेत्रीय जनता के साथ मिलकर संबंधित विभाग के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया जाएगा।

इटारसी के वरिष्ठ साहित्यकार को कोच्चि में सम्मानित किया गया।

मध्यप्रदेश के वरिष्ठ साहित्यकार राम वल्लभ गुप्ता इंदौरी इटारसी का कोच्चि एर्नाकुलम केरल के समस्त साहित्यिक परिषद में आयोजित ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के 50वें अधिवेशन मे मोमेंटो के द्वारा सम्मानित किया गया।

भाखड़ा ब्यास इंप्लाइज यूनियन (एटक - ऐफी) ने किया रोष प्रदर्शन

संगरूर, 27 मार्च (जगसीर सिंह) -

आज भाखड़ा ब्यास इंप्लाइज यूनियन (एटक - ऐफी) डेली वेज पार्ट टाइम सब कमेटी नांगल के अध्यक्ष राममिलन की अगवाई में रोष प्रदर्शन किया गया । इस समय सेंटर काउंसिल भाखड़ा ब्यास एम्पलाइज यूनियन एटक ऐफी के अध्यक्ष श्री अशोक कुमार शर्मा , महासचिव सुरेश कुमार सैनी ,नांगल शाखा के अध्यक्ष जरनैल सिंह , सचिव गुरनाम सिंह,बीबीएमबी आल रिटायर यूनियन के प्रधान गुरनाम सिंह औलख तथा वरिष्ठ उप प्रधान हरबंत सिंह बाबा की अध्यक्षता में गेट मीटिंग की गई और काफी अहम मुद्दे एवं निर्णय लिए गए ।इस समय संगठन के पदाधिकारी ने बताया कि लंबे समय से संगठन की 7 डिमांडों को लेकर बीबीएमबी प्रशासन से पत्राचार मीटिंग की जाती रही है पर बीबीएमबी प्रशासन अपनी टाल मटोले वाली नीति अपनाता जा रहा है जिसके चलते मजदूरों तथा कर्मचारियों में भारी दोष है और संगठन द्वारा माननीय चीफ इंजीनियर से मीटिंग कर उन्हें आग्रह किया गया हमारी मांगों को जल्द से जल्द पूरा किया जाए अन्यथा मजबूर होकर संगठन द्वारा अल्टीमेट जारी कर दिया गया कि आने वाली 7 अप्रैल दिन मंगलवार को भाखड़ा बांध को जाने वाली ट्रेन पावर वीग एवं इरिगेशन की बसों का रोका जाएगा जिसकी जिम्मेदारी बीबीएमबी प्रशासन के उच्च अधिकारियों की होगी इस समय इलाके के सोशल वर्कर एडवोकेट विशाल सैनी भी मौजूद रहे उन्होंने बीबीएमबी प्रशासन की मजदूर विरोधी नीतियों का विरोध करते हुए डेली वेज पार्ट टाइम एवं अन्य कर्मचारी मजदूर का साथ देने के लिए भी कहा और कर्मचारी मजदूर की मांगों को हायर अथॉरिटी तक पहुंचाने का भी प्रयास करने का आश्वासन दिया इस मौके पर डेली वेज यूनियन के प्रधान राजवीर सिंह, सचिव जयप्रकाश, कैलाश, राजकुमार ,सनी ,शिव बहादुर ,इंद्राज, सहज राम ,साहब लाल ,गंगाराम ,तेज बहादुर, अशोक कुमार, राजकुमारी एवं पार्ट टाइम कर्मचारियों के भी साथी मौजूद रहे ।

राम नवमी, नवरात्र के समापन पर भव्य शोभा यात्राओं के साथ कानपुर में रही कन्या भोज की धूम

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां चैत्र नवरात्र के आज अखिरी दिन राम नवमी पर भगवान के साथ ही मां महागौरी की भक्तों ने विधि विधान से पूजा अर्चना की। इस दौरान देवी मंदिरों व घरों में हवन के बाद कन्याओं का पूजन कर उनका भोज भी किया गया। हर ओर देवी गीतों व जयकारों से माहौल भक्तिमय भी रहा। शक्ति की अधिष्ठात्री भगवती जगदंबा व काली जी की आराधना-साधना के पर्व नवरात्रि में आज प्रातः से ही देवी दरबारों में श्रद्धा की फुहार बरसी। श्रद्धालुओं ने माता रानी को नारियल व चुनरी अर्पित कर दर्शन-पूजन किया व घर-परिवार एवं देश समृद्धि की दुआ मांगी। नवरात्र के दिनों में व्रत रखने वाले श्रद्धालुओं में विजय लक्ष्मी ,नेहा, अनुराग, शालू ,सुबोध, राघव, माधव बाजपेई, मनीश मिश्रा, मोना किट्टू और कीनू, रूची राज मिश्रा, मीठी, नंदन, कृष्णा आदि ने देवी मां का दर्शन कर मंदिरों व घरों में परांपरागत कन्या-पूजन कर हलवा, पूड़ी, चना, दही-जलेबी आदि का भोग लगाया। साथ ही कन्याओं को लाल चुनरी व उपहार भी भेंट किया। इस दौरान मंदिरों में 'जय श्री राम व जय माता दी' के उद्घोष के बीच घंटाघड़ियाल भी खूब बजे। वहीं, जगह-जगह भंडारे का आयोजन किया गया, जिसे भक्तों ने बड़े ही भक्ति भाव से चखा। वहीं हर साल की तरह इस साल भी रामनवमी के भव्य शोभा यात्राओं का भी आयोजन किया गया। इस दौरान रामलला रावतपुर मंदिर से निकलने वाली सबसे बड़ी रामनवमी शोभा यात्रा के साथ ही अन्य सभी आयोजनों के दौरान भी सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहे। इसके लिए पुलिस प्रशासन ने पहले से ही तगड़ी तैयारी कर रखी थी जिसके तहत ही रामनवमी पर रावतपुर क्षेत्र से निकलने वाली विशाल शोभायात्रा को सकुशल संपन्न करने के लिए बड़ी संख्या में पुलिस बल भीलगाया गया था ।

जिला अमृतसर में पेट्रोल और डीजल की कोई कमी नहीं – डिप्टी कमिश्नर

जिला वासी अफवाहों से बचें और जरूरत अनुसार ही पेट्रोल/डीजल खरीदें – डीसी

अमृतसर, 27 मार्च (साहिल बेरी):

डिप्टी कमिश्नर श्री दलविंदरजीत सिंह ने कहा है कि जिला अमृतसर में पेट्रोल और डीजल की कोई कमी नहीं है और उपभोक्ता आवश्यकता अनुसार ही पेट्रोल/डीजल की खरीद करें।

डिप्टी कमिश्नर ने जिले के सभी पेट्रोल पंप मालिकों को निर्देश दिए हैं कि कोई भी पेट्रोल पंप मालिक या उनका कर्मचारी सप्लाई की कमी का बहाना बनाकर ओवरचार्जिंग न करे। उन्होंने कहा कि यदि कोई ऐसा करता पाया गया तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

इस दौरान डिप्टी कमिश्नर ने जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक श्रीमती हरवीन कौर को निर्देश दिए कि वे सुनिश्चित करें कि कोई भी पेट्रोल या डीजल की जमाखोरी या कालाबाजारी न करे। यदि कोई ऐसा करता पाया जाता है तो उसके खिलाफ तुरंत कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए।

उन्होंने जिला निवासियों से अपील की कि जिले के किसी भी पेट्रोल पंप पर पेट्रोल/डीजल की कोई कमी नहीं है। इसलिए घबराने की आवश्यकता नहीं है और पहले की तरह जरूरत के अनुसार ही तेल की खरीद करें। किसी को भी इन वस्तुओं की जमाखोरी करने की जरूरत नहीं है।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि किसी पेट्रोल पंप पर ओवरचार्जिंग की जा रही हो तो इसकी सूचना तुरंत जिला प्रशासन को दें।

इस मौके पर जिला कंट्रोलर, खाद्य, सिविल सप्लाई एवं उपभोक्ता मामले विभाग, श्रीमती हरवीन कौर ने बताया कि विभिन्न तेल कंपनियों के सेल्स अधिकारियों के साथ बैठक कर स्थिति की समीक्षा की गई है। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि पेट्रोल और डीजल की सप्लाई सामान्य है और किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है।

उन्होंने कहा कि अफवाहों के कारण कुछ लोग अनावश्यक रूप से पेट्रोल/डीजल जमा कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने आम जनता से अपील की कि अफवाहों से बचें और जरूरत से अधिक खरीदारी न करे

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023